आलोक

भाग-2

दसवीं कक्षा के लिए

माध्यमिक शिक्षा विभाग, असम सरकार

आलोक

भाग 2

(दसवीं कक्षा के लिए)

: प्रस्तुतिकरण और अनुमोदन :

असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्

गुवाहाटी-21

: संकलन और संपादन :

❑ डॉ. अच्युत शर्मा ❑ गोलोक चंद्र डेका

❑ रामनाथ प्रसाद

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

AALOK BHAG 2 : A Text-book of class X for non-Hindi Medium Schools (Hindi[4]), prepared and approved by the Board of Secondary Education, Assam, vide letter No. SEBA/ AB/ELE/ 4/2001/43,988 dated Guwahati the 19th Dec. 2012 and published by Asom Rastrabhasha Prachar Samiti, Guwahati-32.

Free Textbook

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी-32

प्रथम प्रकाशन	: 2012
पुनर्मुद्रण	: 2013
पुनर्मुद्रण	: 2015
पुनर्मुद्रण	: 2016
पुनर्मुद्रण	: 2017
पुनर्मुद्रण	: 2018
पुनर्मुद्रण	: 2019
पुनर्मुद्रण	: 2020
पुनर्मुद्रण	: 2021
पुनर्मुद्रण	: 2022
पुनर्मुद्रण	: 2023

असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पाठ्यपुस्तक

(टैक्स्ट पेपर 70 जीएसएम और कवर पेपर 165 जीएसएम पर मुद्रित)

मुद्रक : सुनील बाइंडिंग वर्क्स
गणेशपाड़ा, आनंद दैमारी पथ, गुवाहाटी-25

डॉ. रनोज पेगु, एम.बी.बी.एस.
मंत्री, असम

शिक्षा, मैदानी जनजाति और
पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग

संदेश

विद्यालयीन शिक्षा का आवश्यक हिस्सा है – पाठ्यपुस्तक। विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित करते हैं। विद्यार्थी ही हमारे राज्य व देश के भविष्य के वास्तविक संसाधन हैं। मानव सभ्यता की धारा शिक्षा द्वारा ही गतिमान होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान में हमारी सरकार ने शिक्षा क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व दिया है।

मौजूदा राज्य सरकार ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक सफलता दिलाने के साथ-साथ उनके जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति तथा राज्य के कल्याण के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है। **प्रज्ञान भारती** के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत **क वर्ग** से **द्वादश वर्ग** तक के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक अविराम रूप से दी जा रही है। सन् 2020 से हमारी सरकार ने इस योजना को स्नातक वर्ग तक विस्तारित किया है। समूचे राज्य में उच्चतर माध्यमिक और स्नातक वर्गों में नामांकन शुल्क की माफी की घोषणा होने से एक सकारात्मक पहल की शुरुआत हुई है।

समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के शिक्षार्थियों को मैट्रिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के शुल्कों को माफ करने की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों की पोशाकों (यूनीफॉर्म) की आपूर्ति के लिए सरकार ने आवश्यक व्यवस्था की है। **आनंदराम बरुवा योजना** के जरिए मैट्रिक पास मेधावी छात्र-छात्राओं को **लैपटॉप** या उसके बदले में आर्थिक अनुदान देने की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के शिक्षण-मार्ग को सुगम बनाने के महान उद्देश्य से कार्यान्वित **प्रज्ञान भारती** योजना के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण जैसे पवित्र कार्यों के निष्पादन में योगदान दे रहे राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद तथा असम राज्यिक पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन निगम एवं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मैं धन्यवाद देता हूँ। ज्ञानार्जन की दिशा में हमारे विद्यार्थी निरंतर परिश्रम करते हुए राष्ट्र के संसाधन के रूप में अपने आप को निर्मित करने में सक्षम होंगे। इसी आशा के साथ मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

(डॉ. रनोज पेगु)
शिक्षा मंत्री, असम

प्राक्कथन

असम माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने शैक्षिक वर्ष 2013 से लागू होने जा रहे नए पाठ्यक्रम के आधार पर दसवीं कक्षा के लिए **आलोक भाग - 2** नामक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की है। छात्र-छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक पाठ के अंत में विविध प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं, जिससे पूरे पाठ को समझने व उत्तर देने में उन्हें समुचित सहायता प्राप्त होगी।

पाठ्यपुस्तक के पांडुलिपि प्रणयन में कई अनुभवी विशेषज्ञों को दायित्व सौंपा गया था, जिन्होंने पूरी निष्ठा से अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए उक्त पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग दिया है। अतः परिषद् इनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करती है।

पाठकों एवं विज्ञ व्यक्तियों से आग्रह है कि यदि इस पाठ्यपुस्तक में कहीं भूल या त्रुटि ज्ञात हो तो इसके संबंध में सकारात्मक परामर्श दें, जिससे आगामी संस्करण में समुचित संशोधन किया जा सके।

बामुनीमैदाम, गुवाहाटी
दिसंबर, 2012

सचिव
असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्
गुवाहाटी-21

दो शब्द

निरक्षरता ही किसी राष्ट्र तथा समाज के विकास में रुकावट डालती है। समाज के लिए यह एक अभिशाप है। भारतवर्ष से पूर्णरूपेण निरक्षरता-उन्मूलन के उद्देश्य से केंद्रीय सरकार ने पूरे देश में 'शिक्षा का अधिकार कानून, 2009' लागू किया है। इसके अनुसार देश के विद्यालयों के कैरिकुलम और पाठ्यक्रमों में भी नवीनता लाई गयी है। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप बच्चों को आकर्षित करनेवाली हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया है।

मुद्रण और प्रकाशन के क्षेत्र में शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक प्रकाशित कर यथासमय छात्र-छात्राओं तक पहुंचाना ही समिति का मुख्य उद्देश्य है। मूलत: इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए असम सरकार की ओर से नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरित करने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की अनुकंपा से और भारत रत्न लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जी के नेतृत्व में सन् 1938 में संस्थापित असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का मुख्य लक्ष्य है-भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को सुचारु रूप से संचालित करना। इन कार्यक्रमों में हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन अन्यतम है। उल्लेखनीय है कि असम सरकार के निर्देशानुसार शैक्षिक वर्ष 1974 से ही समिति हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन करती आई है। परवर्ती समय में केंद्र सरकार की सहायता से असम सरकार ने सन् 1986 से नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित की है।

सन् 2011 से राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना के अनुसार नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें केंद्रीय रूप से राज्य के प्रत्येक शिक्षा खंड तक निर्धारित समयसीमा के अंदर सफलतपूर्वक पहुंचायी जा रही हैं। उल्लेखनीय

है कि कोविड–19 महामारी और लॉकडाउन के चलते असम सरकार ने शिक्षावर्ष जनवरी के बदले अप्रैल महीने तक बढ़ा दिया है। वर्तमान परिस्थिति के साथ सामंजस्य रखते हुए इस वर्ष भी असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने हिंदी पाठ्यपुस्तकों की आपूर्ति हेतु सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ हाथों ली हैं।

असम के शिक्षा क्षेत्र के आमूलचूल परिवर्तन और विकास के जरिए देश के भीतर एक उत्कृष्ट राज्य के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए असम सरकार ने विभिन्न महत्वाकांक्षी योजनाएँ चला रही हैं। वर्तमान में सरकार ने नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना को 12वीं कक्षा तक विस्तारित की है। इसके अतिरिक्त सरकार की ओर से मध्याह्न भोजन, पोशाक वितरण, गरीब परिवार के बच्चों का शुल्क माफी, गुणोत्सव कार्यक्रम के साथ–साथ महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रा–छात्राओं को अनुदान राशि दी जा रही है। इसके अंतर्गत 'क' श्रेणी से 12वीं कक्षा तक नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण की यह प्रशंसनीय और शिक्षार्थी केंद्रित योजना है। सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को सफल बनाने में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पूरी निष्ठा व तत्परता के साथ काम करने के लिए संकल्पबद्ध है।

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

Hindi (Elective)

Class X

Time : 3 Hours (Group-A + Group-B)   Full Marks : 100

Unit	Sub-Unit / Lessons	Marks
	Text-books : 1. आलोक भाग-2	
	2. हिंदी व्याकरण और रचना	
	Group - A (Marks : 50, Time : 2 Hours)	
	गद्य खंड	
1.	नींव की ईंट छोटा जादूगर	10
2.	भोलाराम का जीव सड़क की बात	8
	पद्यखंड	
3.	साखी, पद-त्रय	10
4.	कलम और तलवार, मृत्तिका	6
5.	**व्याकरण :**	16
	(लिंग, वचन, कारक, संधि, समास,उपसर्ग-प्रत्यय, पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, मुहावरे एवं लोकोक्तियां, वाक्य-शुद्धि, वाक्य-परिवर्तन	
	Group - B (Marks : 50)	
6.	नीलकंठ, चिट्ठियों की अनूठी दुनिया	14
7.	जो बीत गई, कायर मत बन	12
8.	**रचना :**	
	निबंध-लेखन	8
	पत्र लेखन	5
	अपठित गद्यांश	6
	अनुवाद	5
		100

विषय-सूची

गद्य खंड

1.	**नींव की ईंट**	रामवृक्ष बेनीपुरी	1–9
2.	**छोटा जादूगर**	जयशंकर प्रसाद	10–20
3.	**नीलकंठ**	महादेवी वर्मा	21–34
4.	**भोलाराम का जीव**	हरिशंकर परसाई	35–46
5.	**सड़क की बात**	रवींद्रनाथ ठाकुर	47–55
6.	**चिट्ठियों की अनूठी दुनिया**	श्री अरविंद कुमार सिंह	56–62

पद्य खण्ड

7.	**साखी**	कबीरदास	65–72
8.	**पद-त्रय**	मीराँबाई	73–78
9.	**जो बीत गयी**	हरिवंश राय बच्चन	79–83
10.	**कलम और तलवार**	रामधारी सिंह 'दिनकर'	84–87
11.	**कायर मत बन**	नरेंद्र शर्मा	88–94
12.	**मृत्तिका**	नरेश मेहता	95–100

गद्य खंड

उचित प्रकार की शिक्षा का अर्थ है प्रज्ञा को जागृत करना तथा समन्वित जीवन का पोषण करना और केवल ऐसी ही शिक्षा एक नवीन संस्कृति तथा शांतिमय विश्व की स्थापना कर सकेगी।

(जे. कृष्णमूर्ति)

1 रामवृक्ष बेनीपुरी

(1902—1968)

यशस्वी ललित निबंधकार रामवृक्ष बेनीपुरी जी आधुनिक हिंदी साहित्य की अमर विभूतियों में अन्यतम हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। आपने गद्य-लेखक, शैलीकार, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी, समाज-सेवी और हिंदी प्रेमी के रूप में अपनी प्रतिभा की अमिट छाप छोड़ी है। राष्ट्र-निर्माण, समाज-संगठन और मानवता के जयगान को लक्ष्य मानकर बेनीपुरी जी ने ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक, उपन्यास, कहानी, बाल साहित्य आदि विविध गद्य-विधाओं में जो महान रचनाएँ प्रस्तुत की हैं, वे आज की युवा पीढ़ी के लिए भी अमोघ प्रेरणा की स्रोत हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी जी का जन्म 1902 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के अंतर्गत बेनीपुर नामक गाँव में हुआ था। बचपन में ही माता-पिता के देहावसान हो जाने के कारण आपका पालन-पोषण ननिहाल में हुआ । मैट्रिक की परीक्षा पास करने से पहले 1920 ई. में वे महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय सेनानी के रूप में आपको 1930 ई. से 1942 ई. तक का समय जेल-यात्रा में ही व्यतीत करना पड़ा। इसी बीच आप पत्रकारिता एवं साहित्य-सर्जना में भी जुड़े रहे। 'बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन' को खड़ा करने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात् आपने साहित्य-साधना के साथ-साथ देश और समाज के नवनिर्माण कार्य में अपने को जोड़े रखा। 1968 ई. में आपका स्वर्गवास हुआ।

बेनीपुरी जी पत्रकारिता जगत से साहित्य-साधना के संसार में आए। छोटी उम्र से ही आप पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे थे। आगे चलकर आपने 'तरुण भारत', 'किसान मित्र', 'बालक', 'युवक', 'कैदी', 'कर्मवीर', 'जनता', 'तूफान', 'हिमालय' और 'नई धारा' नामक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। आपकी साहित्यिक रचनाओं की संख्या लगभग सौ है, जिनमें से अधिक रचनाएँ **'बेनीपुरी ग्रंथावली'** नाम से प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कृतियों में से **'गेहूँ और गुलाब'** (निबंध और रेखाचित्र), **'वंदे वाणी विनायकौ'** (ललित गद्य), **'पतितों के देश में'** (उपन्यास), **'चिता के फूल'** (कहानी संग्रह), **'माटी की मूरतें'** (रेखाचित्र), **'अंबपाली'** (नाटक) विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी जी एक सशक्त गद्यकार हैं। उनकी भाषा-शैली जीवंत, अलंकारयुक्त, प्रवाहमयी और ओज गुण से परिपूर्ण है। रेखाचित्र, संस्मरण और ललित निबंधों की रचना में आपको विशेष सफलता मिली है। मानव सभ्यता का लेखा-जोखा लेने, भारतीय समाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य में झाँकने और प्रतीकार्थ भरने की विशेषताओं के कारण बेनीपुरी जी के ललित निबंध बहुचर्चित रहे हैं।

*'**नींव की ईंट**' बेनीपुरी जी के रोचक एवं प्रेरक ललित निबंधों में अन्यतम है। 'नींव की ईंट' का प्रतीकार्थ है—समाज का अनाम शहीद, जो बिना किसी यश-लोभ के समाज के नव-निर्माण हेतु आत्म-बलिदान के लिए प्रस्तुत है। 'सुंदर इमारत' का आशय है—नया सुंदर समाज। 'कंगूरे की ईंट' का प्रतीकार्थ है—समाज का यश-लोभी सेवक, जो प्रसिद्धि, प्रशंसा अथवा अन्य किसी स्वार्थवश समाज का काम करना चाहता है। निबंधकार के अनुसार भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सैनिकगण नींव की ईंट की तरह थे, जबकि स्वतंत्र भारत के शासकगण कंगूरे की ईंट निकले। भारतवर्ष के सात लाख गाँवों, हजारों शहरों और सैकड़ों कारखानों के नव-निर्माण हेतु नींव की ईंट बनने के लिए तैयार लोगों की जरूरत है। परंतु विडंबना यह है कि आज कंगूरे की ईंट बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है। इस रूप में भारतीय समाज का नव-निर्माण संभव नहीं । इसलिए निबंधकार ने देश के नौजवानों से आह्वान किया है कि वे नींव की ईंट बनने की कामना लेकर आगे आएँ और भारतीय समाज के नव-निर्माण में चुपचाप अपने को खपा दें।*

नींव की ईंट

वह जो चमकीली, सुंदर, सुघड़ इमारत हैं, वह किस पर टिकी है? इसके कंगूरों को आप देखा करते हैं, क्या कभी आपने इसकी नींव की ओर भी ध्यान दिया है?

दुनिया चकमक देखती है, ऊपर का आवरण देखती है, आवरण के नीचे जो ठोस सत्य है उस पर कितने लोगों का ध्यान जाता है?

ठोस 'सत्य' सदा 'शिवम्' होता ही है, किंतु वह हमेशा ही 'सुंदरम्' भी हो यह आवश्यक नहीं।

सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मा करते हैं, जिया करते हैं। हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं - इसीलिए सत्य सेभी भागते हैं। नहीं तो, हम इमारत के गीत नींव के गीत से प्रारंभ करते।

वह ईंट धन्य है, जो कट-छँटकर कंगूरे पर चढ़ती है और बरबस लोक-लोचनों को अपनी ओर आकृष्ट करती है।

किंतु, धन्य है वह ईंट, जो जमीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी!

क्योंकि इसी पहली ईंट पर उसकी मजबूती और पुख्तेपन पर सारी इमारत की अस्ति-नास्ति निर्भर करती है।

उस ईंट को हिला दीजिए, कंगूरा बेतहाशा जमीन पर आ रहेगा।

कंगूरे के गीत गानेवाले हम, आइए, अब नींव के गीत गाएँ।

वह ईंट जो जमीन में इसलिए गड़ गई कि दुनिया को इमारत मिले, कंगूरा मिले!

वह ईंट, जो सब ईंटों से ज्यादा पक्की थी, जो ऊपर लगी होती तो कंपूरे की शोभा सौ गुनी कर देती!

किंतु, जिसने देखा, इमारत की पायदारी उसकी नींव पर मुनहसिर होती है, इसलिए उसने अपने को नींव में अर्पित किया।

वह ईंट, जिसने अपने को सात हाथ जमीन के अंदर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत जमीन के सौ हाथ ऊपर तक जा सके।

वह ईंट जिसने अपने लिए अंधकूप इसलिए कबूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे, सुनहली रोशनी मिलती रहे।

वह ईंट, जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुंदर सृष्टि देखे।

सुंदर सृष्टि! सुंदर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का।

सुंदर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की-पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है।

सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

शहादत और मौन-मूक! जिस शहादत को शोहरत मिली, जिस बलिदान को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह इमारत का कंगूरा है—मंदिर का कलश है।

हाँ, शहादत और मौन-मूक! समाज की आधारशिला यही होती है।

ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया, आप कह लीजिए। किंतु मेरी समझ से ईसाई धर्म को अमर बनाया उन लोगों ने, जिन्होंने उस धर्म के प्रचार में अपने को अनाम उत्सर्ग कर दिया। उनमें से कितने जिंदा जलाए गए, कितने सूली पर जढ़ाए गए, कितने वन-वन की खाक छानते जंगली जानवरों के शिकार हुए, कितने उससे भी भयानक भूख-प्यास के शिकार हुए।

उनके नाम शायद ही कहीं लिखे गए हों—उनकी चर्चा शायद ही कहीं होती हो किंतु ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहा है।

वे नींव की ईंट थे, गिरजाघर के कलश उन्हीं की शहादत से चमकते हैं।

आज हमारा देश आजाद हुआ सिर्फ उनके बलिदानों के कारण नहीं, जिन्होंने इतिहास में स्थान पा लिया है।

देश का शायद कोई ऐसा कोना हो, जहाँ कुछ ऐसे दधीचि नहीं हुए हों, जिनकी हड्डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया।

हम जिसे देख नहीं सकें, वह सत्य नहीं है, यह है मूढ़ धारणा!

ढूँढ़ने से ही सत्य मिलता है। हमारा काम है, धर्म है, ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना।

सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हमने पहला कदम बढ़ाया है।

इस नए समाज के निर्माण के लिए भी हमें नींव की ईंट चाहिए। अफसोस, कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईट बनने की कामना लुप्त हो रही है!

सात लाख गाँवों का नव-निर्माण! हजारों शहरों और कारखानों का नव-निर्माण! कोई शासक इसे संभव नहीं कर सकता। जरूरत है ऐसे नौजवानों की, जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें।

जो एक नई प्रेरणा से अनुप्राणित हों, एक नई चेतना से अभिभूत, जो शाबाशियों से दूर हों दलबंदियों से अलग।

जिनमें कंगूरा बनने की कामना न हो, कलश कहलाने की जिनमें वासना न हो। सभी कामनाओं से दूर सभी वासनाओं से दूर।

उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है। हमारी नींव की ईंटें किधर हैं? देश के नौजवानों को यह चुनौती है!

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म कहाँ हुआ था ?

(ख) बेनीपुरी जी को जेल की यात्राएँ क्यों करनी पड़ी थी ?

(ग) बेनीपुरी जी का स्वर्गवास कब हुआ था ?

(घ) चमकीली, सुंदर, सुघड़ इमारत वस्तुतः किस पर टिकी होती है ?

(ङ) दुनिया का ध्यान सामान्यतः किस पर जाता है ?

(च) नींव की ईंट को हिला देने का परिणाम क्या होगा ?

(छ) सुंदर सृष्टि हमेशा ही क्या खोजती है ?

(ज) लेखक के अनुसार गिरजाघरों के कलश वस्तुतः किनकी शहादत से चमकते हैं ?

(झ) आज किसके लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है ?

(ञ) पठित निबंध में 'सुंदर इमारत' का आशय क्या है ?

2. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) मनुष्य सत्य से क्यों भागता है ?

(ख) लेखक के अनुसार कौन-सी ईंट अधिक धन्य है ?

(ग) नींव की ईंट की क्या भूमिका होती है ?

(घ) कंगूरे की ईंट की भूमिका स्पष्ट करो।

(ङ) शहादत का लाल सेहरा कौन-से लोग पहनते हैं और क्यों ?

(च) लेखक के अनुसार ईसाई धर्म को किन लोगों ने अमर बनाया और कैसे ?

(छ) आज देश के नौजवानों के समक्ष चुनौती क्या है ?

3. संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) मनुष्य सुंदर इमारत के कंगूरे को तो देखा करते हैं, पर उसकी नींव की ओर उनका ध्यान क्यों नहीं जाता ?

(ख) लेखक ने कंगूरे के गीत गाने के बजाय नींव के गीत गाने के लिए क्यों आह्वान किया है ?

(ग) सामान्यत: लोग कंगूरे की ईंट बनना तो पसंद करते हैं, परंतु नींव की ईंट बनना क्यों नहीं चाहते ?

(घ) लेखक ईसाई धर्म को अमर बनाने का श्रेय किन्हें देना चाहता है और क्यों ?

(ङ) हमारा देश किनके बलिदानों के कारण आजाद हुआ ?

(च) दधीचि मुनि ने किसलिए और किस प्रकार अपना बलिदान किया था ?

(छ) भारत के नव-निर्माण के बारे में लेखक ने क्या कहा है ?

(ज) 'नींव की ईंट' शीर्षक निबंध का संदेश क्या है ?

4. **सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में)**

(क) 'नींव की ईंट' का प्रतीकार्थ स्पष्ट करो।

(ख) 'कंगूरे की ईंट' के प्रतीकार्थ पर सम्यक् प्रकाश डालो।

(ग) 'हाँ, शहादत और मौन-मूक! समाज की आधारशिला यही होती है'— का आशय बताओ।

5. **सप्रसंग व्याख्या करो :**

(क) ''हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं, इसीलिए सच से भी भागते हैं।''

(ख) ''सुंदर सृष्टि! सुंदर सृष्टि, हमेशा बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का ।''

(ग) '' अफसोस, कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है!''

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. **निम्नलिखित शब्दों में से अरबी-फारसी के शब्दों का चयन करो :**

इमारत, नींव, दुनिया, शिवम्, जमीन, कंगूरा, मुनहसिर, अस्तित्व, शहादत, कलश, आवरण, रोशनी, बलिदान, शासक, आजाद, अफसोस, शोहरत

2. **निम्नांकित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :**

चमकीली, कठोरता, बेतहाशा, भयानक, गिरजाघर, इतिहास

3. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो :**

(क) नहीं तो, हम इमारत की गीत नींव की गीत से प्रारंभ करते।

(ख) ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहे हैं।

(ग) सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हम पहला कदम बढ़ाए हैं।

(घ) हमारे शरीर पर कई अंग होते हैं।

(ङ) हम निम्नलिखित रूपनगर के निवासी प्रार्थना करते हैं।

(च) सब ताजमहल की सौंदर्यता पर मोहित होते हैं।

(छ) गत रविवार को वह मुंबई जाएगा।

(ज) आप कृपया हमारे घर आने की कृपा करें।

(झ) हमें अभी बहुत बातें सीखना है।

(ञ) मुझे यह निबंध पढ़कर आनंद का आभास हुआ।

4. **निम्नलिखित लोकोक्तियों का भाव-पल्लवन करो :**

(क) अधजल गगरी छलकत जाए।

(ख) होनहार बिरबान के होत चिकने पात।

(ग) अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।

(घ) जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।

5. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ बताओ :**

अंबर, उत्तर, काल, नव, पत्र, मित्र, वर्ण, हार, कल, कनक

6. **निम्नांकित शब्द-जोड़ों के अर्थ का अंतर बताओ :**

अगम-दुर्गम, अपराध-पाप, अस्त्र-शस्त्र, आधि-व्याधि, दुख-खेद, स्त्री-पत्नी, आज्ञा-अनुमति, अहंकार-गर्व

❖ योग्यता-विस्तार

1. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित 'मशाल' तथा 'गेहूँ और गुलाब' शीर्षक निबंधों का संग्रह करके पढ़ो और उनमें निहित संदेश सहपाठियों को बताओ।
2. ललित निबंध की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

सुघड़ = सुडौल, सुंदर आकार वाला

इमारत = बड़ा पक्का मकान

चकमक = चमकीलापन

बरबस = बलपूर्वक

पुख्तापन = मजबूती, दृढ़ता

बेतहाशा = शीघ्रता से, जल्दी ही

मुनहसिर = आश्रित, निर्भर

विलीन = मिटा देना

शोहरत = प्रसिद्धि, यश

ईसा = ईसा मसीह, जिन्होंने ईसाई धर्म का प्रवर्तन-प्रचार किया था।

दधीचि = एक प्रसिद्ध ऋषि, जिन्होंने अपनी हड्डियों का दान देवराज इंद्र का वज्र बनाने के लिए कर दिया था।

अनुप्राणित = प्रेरित, प्रोत्साहित

वासना = तीव्र इच्छा, कामना

कंगूरा = महल या भवन का सबसे ऊपरी भाग, शिखर का अंश

नींव = महल, भवन आदि का सबसे नीचे का भाग, बुनियाद

लोक-लोचन = लोगों की आँखें

अस्ति-नास्ति = होना न होना, अस्तित्व

पायदारी = टिकाऊपन

अंधकूप = अंधकार भरा नीचा स्थान

शहादत = बलिदान

कलश = मंदिर आदि का सबसे ऊपरी भाग

आजाद = स्वाधीन, स्वतंत्र

उत्सर्ग = न्योछावर, बलिदान

वृत्रासुर = एक अत्याचारी राक्षस

मूढ़ = मूर्ख, बेवकूफी पूर्ण

अफसोस = दुख

होड़ा-होड़ी = प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता

अभिभूत = आनंद-मग्न

चुनौती = ललकार

2

जयशंकर प्रसाद
(1889—1937)

बाबू जयशंकर प्रसाद का आविर्भाव आधुनिक हिन्दी साहित्य के छायावाद-युग (1918 ई. से 1938 ई. तक) में हुआ था । आपने अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध और आलोचना के क्षेत्रों में अमर लेखनी चलाकर आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। साहित्यकार के अलावा आप इतिहास एवं पुरातत्व के विद्वान तथा एक गंभीर चिन्तक भी थे । भारतीय सभ्यता-संस्कृति, धर्म-दर्शन, भक्ति-अध्यात्म के प्रति गहरी रुचि रखने वाले प्रसाद जी ने इन्हें अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का भरपूर प्रयास किया है। साथ ही आपने यांत्रिकता, बुद्धिवादिता और भौतिकता की अतिरेकता से उत्पन्न आधुनिक जीवन की विविध मूलभूत समस्याओं को चिह्नित करके अपने ढंग से उनका समाधान निकालने की भी कोशिश की है। इन महान प्रयासों के कारण आपके साहित्य की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

प्रसाद जी का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित कान्यकुब्जीय वैश्य परिवार में 1889 ई. में हुआ था। पिता देवीप्रसाद और बड़े भाई शंभुरत्न जी के असमय निधन होने के कारण सत्रह वर्ष की अवस्था में ही पैतृक कारोबार तथा घर-परिवार का सारा दायित्व प्रसाद जी को संभालना पड़ा। आपने घर पर ही संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी और हिंदी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ, भारतीय इतिहास आदि का अध्ययन भी आपने किया। 'कलाधर' नाम से ब्रजभाषा में कविता-लेखन के साथ प्रसाद जी का साहित्यिक जीवन आरंभ हुआ था। परंतु आपने शीघ्र ही खड़ीबोली को अपनाया और अलग-अलग विधाओं में विपुल साहित्य की रचना की। आपके द्वारा प्रयुक्त खड़ीबोली प्रौढ़, प्रांजल कलात्मक एवं संस्कृतनिष्ठ रही है। 1937 ई. में आपका देहावसान हुआ।

भारतीय संस्कृति के चितेरे प्रसाद जी मूलतः कवि-हृदय के थे। आप छायावादी काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आपकी काव्य-रचनाएँ हैं—

उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छ्वास, बभ्रुवाहन, काननकुसुम, प्रेमपथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू (खंडकाव्य), **लहर और कामायनी** (महाकाव्य) उनके द्वारा विरचित नाटक हैं— **सज्जन कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित, राज्यश्री, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, स्कंदगुप्त, एक घूँट, चंद्रगुप्त** और **ध्रुवस्वामिनी** प्रसाद जी ने तीन उपन्यासों की भी रचना की है। **कंकाल, तितली** और **इरावती** उनके द्वारा विरचित निबंधों का संग्रह है—काव्य और कला तथा अन्य निबंध।

प्रसाद जी ने लगभग सत्तर कहानियाँ हिंदी को भेंट की हैं। ये कहानियां **छाया, प्रतिध्वनि, आकाश-दीप, आधी, इंद्रजाल** आदि संग्रहों में संकलित हैं। उनकी प्रथम कहानी '**ग्राम**' 1911 ई. में 'इंदु' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। कहानीकार के रूप में आप भाववादी धारा के प्रवर्त्तक कहलाएँ। आपकी अधिकांश कहानियों में चारित्रिक उदारता, प्रेम, करुणा, त्याग बलिदान, अतीत के प्रति मोह से युक्त भावमूलक आदर्श की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने अपने समकालीन समाज की आर्थिक विपन्नता, निरीहता, अन्याय और शोषण को भी कुछेक कहानियों में चित्रित किया है। 'सहयोग', 'गुदड़ी के लाल', 'अघोरी का मोह', 'विराम चिह्न', 'आकाश-दीप', 'पुरस्कार', 'ममता', 'समुद्र-संतरण', 'मधुआ', 'इंद्रजाल', 'छोटा जादूगर' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

*'**छोटा जादूगर**' प्रसाद जी की एक ऐसी मनोरम कहानी है, जिसमें आर्थिक विपन्नता और प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए तेरह-चौदह साल के एक लड़के के चरित्र को आदर्शात्मक रूप में उभारा गया है। परिस्थिति की माँग से एक बालक किस प्रकार अपने पाँवों पर खड़ा हो जाता है—उसका यहाँ हृदयग्राही चित्रण हुआ है। छोटे जादूगर के रूप में प्रस्तुत बालक के मधुर व्यवहार, चतुराई, क्रिया-कौशल, स्वाभिमान और मातृ-भक्ति से पाठक का मन सहज ही द्रवीभूत हो उठता है।*

छोटा जादूगर

1

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था । मैं खड़ा था, उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी सम्पूर्णता थी। मैंने पूछा—''क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा ?''

''मैंने सब देखा। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं । खिलौने पर निशाना लगाते हैं। तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौने पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं दिखा सकता हूँ।''—उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा—''और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सकता । टिकट लगता है।''

मैंने कहा—'तो चला मैं वहाँ पर, तुमको लिवा चलूँ।'' मैंने मन ही मन कहा-'भाई! आज के तुम्हीं मित्र रहे।'

उसने कहा—''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा—''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने स्वीकार-सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा—''तुम्हारे और कौन है?''

''माँ और बाबूजी।''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?''

''बाबूजी जेल में हैं।''

''क्यों?''

''देश के लिए ।''— वह गर्व से बोला।

''और तुम्हारी माँ?''

''वह बीमार है।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा—''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

''हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी। माँजी बीमार है, इसलिए मैं नहीं गया।''

''कहाँ?''

''जेल में। जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा-दारू करूँ और अपना पेट भरूँ। ''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा—''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।''

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज! उसका कोई गेंद खाली नहीं गया। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिए।

लड़के ने कहा—''बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।'' वह नौ-दो ग्यारह हो गया। मैंने मन ही मन कहा—''इतनी जल्दी आँख बदल गई।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा—''बाबूजी!''

मैंने पूछा—''कौन?''

''मैं हूँ छोटा जादूगर।''

2

कलकत्ता के सुरम्य बोटानिकल उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मण्डली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला। साफ जाँघिया। और आधी बाँहों का कुरता। फिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बँधा हुआ था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा—

''बाबूजी नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।''

''फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा, बाबूजी?''

''नहीं जी....तुमको....'' क्रोध से कुछ कहने जा रहा था। श्रीमती ने कहा—''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।'' मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती की वाणी में वह माँ की सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरम्भ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बन्दर घुड़कने लगा।

गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक को आवश्यकता ने कितने शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की

डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने-आप नाच रहे थे। मैंने कहा—''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।''

श्रीमती ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा। मैंने कहा—''लड़के!''

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती ने कहा-''अच्छा तुम इस रुपए से क्या करोगे?''

''पहले भर पेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कम्बल लूँगा।''

मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा—'ओह! कितना स्वार्थी हूँ! मैं उसके एक रुपए पाने पर ईर्ष्या करने लगा था न।''

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लताकुंज देखने के लिए चले।

उस छोटे-से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। एकदम शान्त वातावरण था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हवड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण होता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कम्बल कांधे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा—''तुम यहाँ कहाँ?''

''मेरी माँ यही है न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।'' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा—''माँ!''

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

3

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया था। फिर भी चलते-चलते एक बार उद्यान को

देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी, यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब वह जैसे स्वयं कँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षणभर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा—''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।''—अविचल भाव से उसने कहा।

''तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए हो ?'' मैंने कुछ क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दु:ख का माप अपना ही साधन तो है। उसी के अनुपात से वह तुलना करता है।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी।

उसने कहा—''न क्यों आता ?''

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा—''जल्दी चलो।'' मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था, किन्तु स्त्री के मुँह से ''बे...'' निकल कर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) बाबू जयशंकर प्रसाद का जन्म हुआ था—

(अ) काशी में (आ) इलाहाबाद में

(इ) पटना में (ई) जयपुर में

(ख) जयशंकर प्रसाद जी का साहित्यिक जीवन किस नाम से आरंभ हुआ था?

(अ) 'विद्याधर' नाम से (आ) 'कलाधर' नाम से

(इ) 'ज्ञानधर' नाम से (ई) 'करुणाधर' नाम से

(ग) प्रसाद जी का देहावसान हुआ—

(अ) 1935 ई. में (आ) 1936 ई. में

(इ) 1937 ई. में (ई) 1938 ई. में

(घ) कार्निवाल के मैदान में लड़का चुपचाप किनको देख रहा था?

(अ) चाय पीने वालों को (आ) मिठाई खाने वालों को

(इ) गाने वालों को (ई) शरबत पीने वालों को

(ङ) लड़के को जादूगर का कौन-सा खेल अच्छा मालूम हुआ?

(अ) खिलौने पर निशाना लगाना (आ) चूड़ी फेंकना

(इ) तीर से नम्बर छेदना (ई) ताश का खेल दिखाना

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रथम कहानी का नाम क्या है?

(ख) प्रसाद जी द्वारा विरचित महाकाव्य का नाम बताओ।

(ग) लड़का जादूगर को क्या समझता था?

(घ) लड़का तमाशा देखने परदे में क्यों नहीं गया था?

(ङ) श्रीमान ने कितने टिकट खरीद कर लड़के को दिए थे?

(च) लड़के ने हिंडोले से अपना परिचय किस प्रकार दिया था?

(छ) बालक (छोटे जादूगर) को किसने बहुत ही शीघ्र चतुर बना दिया था?

(ज) श्रीमान कलकत्ते में किस अवसर पर की छुट्टी बिता रहे थे ?

(झ) सड़क के किनारे कपड़े पर सजे रंगमंच पर खेल दिखाते समय छोटे जादूगर की वाणी में स्वभावसुलभ प्रसन्नता की तरी क्यों नहीं थी ?

(ञ) मृत्यु से ठीक पहले छोटे जादूगर की माँ के मुँह से कौन-सा अधूरा शब्द निकला था ?

3. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) बाबू जयशंकर प्रसाद की बहुमुखी प्रतिभा का परिचय किन क्षेत्रों में मिलता है ?

(ख) श्रीमान ने छोटे जादूगर को पहली भेंट के दौरान किस रूप में देखा था ?

(ग) ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा ?'' छोटे जादूगर ने ऐसा कब कहा था ?

(घ) निशानेबाज के रूप में छोटे जादूगर की कार्य-कुशलता का वर्णन करो।

(ङ) कलकत्ते के बोटानिकल उद्यान में श्रीमान-श्रीमती को छोटा जादूगर किस रूप में मिला था ?

(च) कलकत्ते के बोटानिकल उद्यान में श्रीमान ने जब छोटे जादूगर को 'लड़के !' कहकर संबोधित किया, तो उत्तर में उसने क्या कहा ?

(छ) ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''- इस प्रश्न के उत्तर में छोटे जादूगर ने क्या कहा ?

4. संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में)

(क) प्रसाद जी की कहानियों की विशेषताओं का उल्लेख करो ।

(ख) ''क्यों जी , तुमने इसमें क्या देखा ? - इस प्रश्न का उत्तर छोटे जादूगर ने किस प्रकार दिया था ?

(ग) अपने माँ-बाप से संबंधित प्रश्नों के उत्तर में छोटे जादूगर ने क्या क्या कहा था ?

(घ) श्रीमान ने तेरह-चौदह वर्ष के छोटे जादूगर को किसलिए आश्चर्य से देखा था ?

(ङ) श्रीमती के आग्रह पर छोटे जादूगर ने किस प्रकार अपना खेल दिखाया ?

(च) हवड़ा की ओर आते समय छोटे जादूगर और उसकी माँ के साथ श्रीमान की भेंट किस प्रकार हुई थी ?

(छ) सड़क के किनारे कपड़े पर सजे रंगमंच पर छोटा जादूगर किस मन:स्थिति में और किस प्रकार खेल दिखा रहा था ?

(ज) छोटे जादूगर और उसीक माँ के साथ श्रीमान की अंतिम भेंट का अपने शब्दों में वर्णन करो।

5. सम्यक उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) बाबू जयशंकर प्रसाद की साहित्यिक देन का उल्लेख करो।

(ख) छोटे जादूगर के मधुर व्यवहार एवं स्वाभिमान पर प्रकाश डालो।

(ग) छोटे जादूगर की चतुराई और कार्य-कुशलता का वर्णन करो।

(घ) छोटे जादूगर के देश-प्रेम और मातृ-भक्ति का परिचय दो।

(ङ) छोटे जादूगर की कहानी से तुम्हें कौन-सी प्रेरणा मिलती है?

6. सप्रसंग व्याख्या करो :

(क) ''मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी संपूर्णता थी।''

(ख) ''श्रीमती की वाणी में वह माँ की सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता।''

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्यों को पहचानो :

(क) कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी।

(ख) माँजी बीमार है, इसलिए मैं नहीं गया।

(ग) मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया।

(घ) माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना।

(ङ) मैं भी पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से 'बे...' निकलकर रह गया।

2. अर्थ लिखकर निम्नांकित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करो :

नौ दो ग्यारह होना, आँखें बदल जाना, घड़ी समीप होना, दंग रह जाना, श्रीगणेश होना, अपने पाँवों पर खड़ा होना, अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग-परिवर्तन करो :

रस्सी, जादूगर, श्रीमान, गुड़िया, वर, स्त्री, नायक, माली

4. निम्नांकित शब्दों के लिंग निर्धारित करो :

रुकावट, हँसी, शरबत, वाणी, भीड़, तिरस्कार, निशाना, झील

5. निम्नलिखित शब्दों के वचन परिवर्तन करो :

खिलौना, आँख, दुकान, छात्रा, बिल्ली, साधु, कहानी

❖ योग्यता-विस्तार

1. प्रसाद जी द्वारा रचित 'ममता' शीर्षक कहानी का संग्रह करके पढ़ो।
2. किसी किशोर/किशोरी की कर्तव्य-परायणता पर एक छोटी-सी कहानी लिखो और अपने भाई-बहन को सुनाओ।
3. खेल-तमाशे दिखाकर आजीविका कमाने वाले बच्चों के प्रति समाज का कर्तव्य क्या होना चाहिए—इस विषय पर कक्षा में चर्चा करो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

विनोद = परिहास, मन बहलावा

फुहारा = फुहार अथवा हल्की वर्षा छोड़ने वाला उपकरण

निकम्मा = किसी भी काम का न होना

दंग रह जाना = आश्चर्यचकित रह जाना

बोटानिकल = वनस्पति संबंधी

चारखाना = वह वस्त्र जिसमें रंगीन धारियों के चौखूटे खाने बने हों

क्रुद्ध = क्रोध से भरा हुआ

बड़ा दिन = क्रिसमस

घड़ी समीप होना = मृत्यु का समय पास आना

कलनाद = मधुर शब्द

विषाद = दुःख, वेदना

अभाव = गरीबी, आर्थिक विपन्नता

प्रगल्भता = निःसंकोच बात करने का भाव

तिरस्कार = अपमान, भर्त्सना

नौ दो ग्यारह होना = भाग जाना

उद्यान = बाग, बगीचा

मस्तानी = मस्ती भरी

वाचालता = अधिक बात करने का भाव

चिथड़ा = फटा कपड़ा

स्फूर्तिमान = उत्साहित, आनन्दित

अपने पाँवों पर खड़ा होना = स्वावलंबी बनना

3 महादेवी वर्मा

(1907—1987)

सन् 1907 की होली के दिन उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में जन्मी महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। विवाह के बाद पढ़ाई कुछ अंतराल से फिर शुरू की। वे मीडिल में पूरे प्रांत में प्रथम आईं और छात्रवृत्ति भी पाईं। यह सिलसिला कई कक्षाओं तक चला। बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहा, लेकिन महात्मा गांधी के आह्वान पर सामाजिक कार्यों में जुट गईं। उच्च शिक्षा के लिए विदेश न जाकर नारी शिक्षा प्रसार में जुट गईं। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।

महादेवी ने छायावाद के चार प्रमुख रचनाकारों में औरों से भिन्न अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। इनका समस्त काव्य वेदनामय है। इन्होंने साहित्य के बेजोड़ गद्य रचनाओं से भी समृद्ध किया है।

11 सितंबर, 1987 को उनका देवावसान हुआ। उन्हें साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित प्रायः सभी प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने सन् 1956 में उन्हें पद्मभूषण अलंकार से अलंकृत किया था।

केवल आठ वर्ष की उम्र में **बारहमासा** जैसी बेजोड़ कविता लिखने वाली महादेवी की प्रमुख काव्य कृतियाँ है—**नीहार**, **रश्मि**, **नीरजा**, **सांध्यागीत**, **दीपशिखा**, **प्रथम आयाम**, **अग्निरेखा**, **यामा** और गद्य रचनाएँ हैं—**अतीत के चलचित्र**, **शृंखला की कड़ियाँ**, **स्मृति की रेखाएँ**, **पथ के साथी**, **मेरा परिवार** और **चिंतन के क्षण**। महादेवी की रुचि चित्रकला में भी रही। उनके बनाए चित्र उनकी कई कृतियों में प्रयुक्त किए गए हैं।

हिन्दी गद्य साहित्य में संस्मरण एवं रेखाचित्र को बुंलदियों तक पहुँचाने का श्रेय महादेवी जी को है। उनकी रचनाओं में समाज के शोषित, उपेक्षित व पीड़ित लोगों के प्रति ही नहीं, बल्कि मानवेतर प्राणियों के लिए भी उतना ही प्रेम, करुणा व सहिष्णुता दृष्टिगत होती है।

*‘**नीलकंठ**’ नामक प्रस्तुत रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने अपने पालतू मोर के मीठे-कड़वे अनुभवों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। इस पाठ के माध्यम से लेखिका के जीव-जंतुओं के प्रति अथाह प्रेम और सहानुभूति का परिचय मिलता है। नीलकंठ सहित उसके सभी साथियों के रूप, स्वभाव, व्यवहार और चेष्टाओं का लेखिका ने जितनी गहनता और सूक्ष्मता से निरीक्षण तथा वर्णन किया है, उससे यह रेखाचित्र अत्यंत जीवंत बन गया है।*

नीलकंठ

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर मैं लौट रही थी कि चिड़ियों और खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरंभ किया, सलाम गुरु जी! पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इनसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दूँ! टालने के लिए मैंने कह दिया, ''गुरुजी ने मँगवाए हैं। वैसे, यह कमबख्त रोजगार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो।''

बड़े मियाँ के भाषण की तूफान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुननेवाला थककर जहाँ रोक दे वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोककर पूछा, ''मोर के बच्चे हैं कहाँ?'' बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे-से पिंजड़ी तक पहुँची, जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। पिंजड़े इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी-शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी जड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियाँ की भाषण-मेल चली जा रही थी, ''ईमान कसम, गुरुजी-चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपए लिए हैं। बारहा कहा, भई जरा सोच तो, अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला! पर वह मूँजी क्यों

सुनने लगा। आपका खयाल करके अछता-पछताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें।'' अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजड़ा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी-शावकों के छटपटाने से लगता था मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, ''तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया है।''

कदाचित अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, ''मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं। हैं तो पक्षी ही।'' चिढ़ा दिया जाने के कारण ही संभवत: उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाजा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गए, कभी मेज के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुका-छिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी कागजों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज पर, कभी कुरसी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाजा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागंतुकों का पता लगा सकती थी और तब उसके शोध का क्या परिणाम होता,यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाजा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जाएगी।

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुँचाया जो मेरे सामान्य निवास है।

दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहनेवालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर के बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमशः और रंगमय था, जैसा इल्ली से तितली की बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ,परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गरदन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्यामश्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सबेरे ही वह सब खरगोश कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रंदन न करने लगते उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। दंडविधान के समान ही उन जीव-जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्राय: वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे।

ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप जाली के भीतर पहुँच गया। सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था, उससे चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी के चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ-पंख समेटकर सर से एक झपट्टे में नीचे आ गया। संभवत: अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है।

उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परंतु निश्चेष्ट-सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी परंतु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात भर उसे पंखों के नीचे रखे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा, यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक-मात्र नहीं। इसी से उसे बाज, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था। मेघों की साँवली छाया में अपने इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परंतु उसकी गति में भी एक छंद रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ की दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बाईं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल-परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता; परंतु अचानक एक दिन वह मेरे जाली घर के पास पहुँचते ही, अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्य भंगिमा नित्य का क्रम बन गई। प्राय: मेरे साथ कोई-न-कोई देशी-विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानपूर्वक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली। जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने

चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता।

नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ॠतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मंद केका की गूँज-अनुगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूँदों के उतरने के लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरंभ होता। और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिम-झिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक-दूसरे के पंखों से टपकनेवाली बूँदों को चोंच से पी-पी कर पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफेद डोरे से कान में बँधी ऐनक को ही अपने ध्यान का केंद्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैरों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थीं कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी-''देखिए गुरुजी, कमबख्त चिड़ीमार ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है! आप न आई होतीं तो मैं उसी के सिर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ!''

सारांश यह कि सात रुपए देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आई और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना और पंजों की मरहमपट्टी और देखभाल करने पर वह महीने भर में अच्छी हो गई। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परंतु वह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया कुब्जा। नाम के अनुरूप वह स्वभाव से भी कुब्जा ही प्रमाणित हुई। अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मार कर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा की भाँति पंखों को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सब में मेल हो जाएगा। अंत में तीन-चार मास के उपरांत एक दिन

सवेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। 'क्यों' का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा। नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भागकर लौट आया था, अत: वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूँढ़ आरंभ की। खोज के क्रम में वह प्राय: जाली का दरवाजा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढती रहती थी। एक दिन वह आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामत: कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परंतु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी-प्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष महत्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

अभ्यासमाला

❖ **बोध एवं विचार**

1. **सही विकल्प का चयन करो :**

(क) नीलकंठ पाठ में महादेवी वर्मा की कौन-सी विशेषता परिलक्षित हुई है ?

(अ) जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम

(आ) मनुष्यों के प्रति सहानुभूति

(इ) पक्षियों के प्रति प्रेम

(ई) राष्ट्रीय पशुओं के प्रति प्रेम

(ख) महादेवी जी ने मोर-मोरनी के जोड़े के लिए कितनी कीमत चुकाई ?

(अ) पाँच रुपए (आ) सात रुपए

(इ) तीस रुपए (ई) पैंतीस रुपए

(ग) विदेशी महिलाओं ने नीलकंठ को क्या उपाधि दी थी ?

(अ) परफैक्ट जेंटिलमैन (आ) किंग ऑफ द जंगल

(इ) ब्यूटीफूल बर्ड (ई) स्वीट एंड हैंडसम परसन

(घ) महादेवी वर्मा ने अपनी पालतू बिल्ली का नाम क्या रखा था ?

(अ) चित्रा (आ) राधा

(इ) कुब्जा (ई) कजली

(ङ) नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु थी—

(अ) ग्रीष्म ऋतु (आ) वर्षा ऋतु

(इ) शीत ऋतु (ई) वसंत ऋतु

2. **अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :**

(क) मोर-मोरनी के जोड़े को लेकर घर पहुँचने पर सब लोग महादेवी जी से क्या कहने लगे ?

(ख) महादेवी जी के अनुसार नीलकंठ को कैसा वृक्ष अधिक भाता था ?

(ग) नीलकंठ को राधा और कुब्जा में किसे अधिक प्यार था और क्यों ?

(घ) मृत्यु के बाद नीलकंठ का संस्कार महादेवी जी ने कैसे किया ?

3. **संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :**

(क) बड़े मियाँ ने मोर के बच्चे दूसरों को न देकर महादेवी जी को ही क्यों देना चाहता था ?

(ख) महादेवी जी ने मोर और मोरनी के क्या नाम रखे और क्यों ?

(ग) लेखिका के अनुसार कार्तिकेय ने मयूर को अपना वाहन क्यों चुना होगा ? मयूर की विशेषताओं के आधार पर उत्तर दो।

(घ) नीलकंठ के रूप-रंग का वर्णन अपने शब्दों में करो। इस दृष्टि से राधा कहाँ तक भिन्न थी ?

(ङ) बारिश में भींगकर नृत्य करने के बाद नीलकंठ और राधा पंखों को कैसे सूखाते ?

(च) नीलकंठ और राधा के नृत्य का वर्णन अपने शब्दों में करो।

(छ) वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय हो जाता था, क्यों ?

(ज) जाली के बड़े घर में रहनेवाले वाले जीव-जंतुओं के आचरण का वर्णन करो।

(झ) नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप के चंगुल से किस तरह बचाया ?

(ञ) लेखिका को नीलकंठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थीं ?

4. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) नीलकंठ के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में वर्ण करो।

(ख) कुब्जा और राधा के आचरण में क्या अंतर परिलक्षित होते हैं ? क्यों ?

(ग) मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं—इस कथन का आशय समझाकर लिखो।

❖ **भाषा एवं व्याकरण ज्ञान :**

1. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद करो :

नवांगतुक, मंडलाकार, निश्चेष्ट, आनंदोत्सव, विस्मयाभिभूत, आविर्भूत, मेघाच्छन्न, उद्दीप्त

2. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह करते हुए समास का नाम भी बताओ :

पक्षी-शावक, करुण-कथा, लय-ताल, धूप-छाँह, श्याम-श्वेत, चंचु-प्रहार, नीलकंठ, आर्तक्रंदन, युद्धवाहन

3. निम्नलिखित शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करो :

स्वाभाविक, दुर्बलता, रिमझिमाहट, पुष्पित, चमत्कारिक, क्रोधित, मानवीकरण, विदेशी, सुनहला, परिणामतः

4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो :

(क) पूँछ लंबी हुई और उसके पँखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे।

(ख) केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया।

(ग) कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली।

(घ) बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक दिया।

उपर्युक्त चारों वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ है। इनमें 'हो, आ, दे रोक' ये मुख्य क्रियाएँ हैं और उठे, गया, डाली, लिया ये रंजक क्रियाएँ हैं। ये रंजक क्रियाएँ क्रमशः आकस्मिकता, पूर्णता और अनायसता का अर्थ देती हैं।

उठना, जाना, डालना, लेना क्रियाओं से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं से चार वाक्य बनाओ।

5. **निम्नलिखित वाक्यों में उदाहरणों के अनुसार यथास्थान उपयुक्त विराम चिह्न लगाओ :**

उदाहरण :

1. उन्होंने कहना आरंभ किया सलाम गुरुजी

⇨ उन्होंने कहना आरंभ किया, ''सलाम गुरुजी!''

2. आम अशोक कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी।

⇨ आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी।

(क) उन्हें रोककर पूछा मोर के बच्चे हैं कहाँ

(ख) सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए

(ग) चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली पंख नोच डाले

(घ) न उसे कोई बीमारी हुई न उसके शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला

(ङ) मयूर को बाज़ चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है

❖ योग्यता-विस्तार

1. रेखाचित्र क्या है ? रेखाचित्र की विशेषताएँ क्या-क्या हैं ? उनकी जानकारी प्राप्त करो।
2. अपने परिवार, मित्रों अथवा अपने आस-पड़ोस द्वारा पालित किसी पशु या पक्षी के रूप-रंग, स्वभाव, व्यवहार तथा क्रियाकलापों का अवलोकन करो और उसके आधार पर उसका शब्द-चित्र खींचो।
3. जीव-जंतु के विषय में लिखे गए अन्य लेखकों की साहित्यिक रचनाएँ खोजकर पढ़ो और ऐसी ही रचनाएँ खुद भी लिखने की कोशिश करो।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अनुसरण	= पीछे-पीछे चलना
संकीर्ण	= सँकरा, छोटा
आविर्भूत	= प्रकट
नवागंतुक	= नया-नया आया हुआ, नया अतिथि
मार्जारी	= मादा बिल्ली
इल्ली	= तितली के बच्चों का अंडे से निकलने के बाद का रूप
बंकिम	= टेढ़ा
इंद्रनील	= नीलकांतमणि, नीलम, नीलमणि, इंद्र का प्रिय रत्न
द्युति	= चमक
दीप्त होना	= चमकना
चंचु-प्रहार	= चोंच से चोट करना
आर्तक्रंदन	= दर्द भरी आवाज में रोना
अधर	= बीच में
कर्णवेध	= कान छेदना
निश्चेष्ट	= बिना प्रयास के
कार्तिकेय	= कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति
मंजरियाँ	= नई कोपलें, बौर
मंद्र	= गंभीर, धीमा
क्रूर कर्म	= कठोर कार्य
स्तबक	= गुलदस्ता, पुष्प गुच्छ
कुब्जा	= कुब्बड़वाली, कंस की एक दासी जो कुबड़ी थी, श्री कृष्ण ने उसका कुब्बड़ ठीक किया था
दुकेली	= जो अकेली न हो, जिसके साथ कोई और हो
पक्षी-शावक	= पक्षी के बच्चे
बारहा	= बार-बार
छंद रहता-सा	= गति में लय का होना
सुरम्य	= मनोहर
मूँजी	= कंजूस
केका	= मोर की बोली

4 हरिशंकर परसाई
(1922—1995)

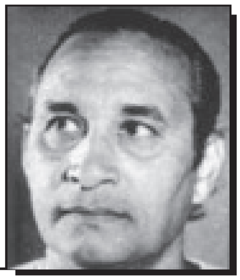

आधुनिक हिंदी व्यंग्यात्मक साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक हरिशंकर परसाई जी का जन्म सन् 1922 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित जमानी नामक गाँव में हुआ। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे नागपुर आए और नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद आपने अध्यापन कार्य शुरू किया। पर, सन् 1947 से आप स्वतंत्र लेखन कार्य से जुड़ गए। कुछ समय तक उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काम किया। आपने जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका भी निकाली। सन् 1995 में आप दिवंगत हो गए।

परसाई जी ने साहित्य की कई विधाओं में प्रचुर रचनाएँ की हैं। परंतु हिंदी साहित्य जगत में वे व्यंग्य लेखक के रूप में अधिक विख्यात हुए। उनकी रचनाओं में **रानी नागफनी की कहानी** और **तट की खोज** (उपन्यास), **हँसते हैं रोते हैं** और **जैसे उनके दिन फिरे** (कहानी संग्रह), **भूत के पाँव पीछे, सदाचार की ताबीज, बेईमानी की परत, पगडंडियों का जमाना, शिकायत मुझे भी है,** (निबंध संग्रह), **ठिठुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा का दौर** और **तिरछी रेखाएँ** (व्यंग्य संग्रह) आदि प्रमुख हैं। 'परसाई रचनावली' छह भागों में प्रकाशित हो चुके हैं।

परसाई जी के निबंधों के विषय मौलिक, सामयिक एवं आकार में लघु तथा अछूते विषयों को अपने आप में समेटे हुए हैं। जहाँ एक ओर उन्होंने व्यंग्य रचनाओं में समाज में फैले पाखण्ड, भ्रष्टाचार, शोषण, बेईमानी जैसी कुरीतियों का पर्दाफाश किया है, वहीं दूसरी ओर तिलमिलाहट पैदा करने वाली एक अजीब शक्ति भी है। इनके व्यंग्य सटीक एवं प्रभावशाली होते हैं। आम आदमी की बोलचाल की भाषा होने तथा बीच-बीच में अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग से आपकी रचनाएँ बेहद रोचक बन पड़ी हैं।

'भोलाराम का जीव' *नामक कहानी में हरिशंकर परसाई ने पौराणिक युग के परिपेक्ष्य में आधुनिक समाज व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार को मार्मिकता के साथ पेश किया है। यह भ्रष्टाचार लगभग हर सरकारी विभाग में व्याप्त है तथा इससे समाज का हर वर्ग प्रभावित है। पाँच साल पहले सेवानिवृत्त भोलाराम की परेशानी में आम जनता की परेशानी छिपी हुई है। पाँच वर्षों तक पेंशन के लिए कार्यालय का चक्कर लगानेवाले भोलाराम के परिवार की आर्थिक दयनीयता पाठकों को सोचने पर विवश कर देती है। कहानी के अंत में नारद के सामने फाइल के पन्नों से भोलाराम की आत्मा की आवाज परिस्थिति की विडम्बना को व्यंग्यात्मक बना देती है।*

भोलाराम का जीव

ऐसा कभी नहीं हुआ था।

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नर्क में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे—पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीझकर रजिस्टर इतने जोर से बंद किया कि मक्खी चपेट में आ गयी। उसे निकालते हुए वह बोले—'महाराज, रिकार्ड सब ठीक है।' भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर हाँ अभी यहाँ तक नहीं पहुँचा।'

धर्मराज ने पूछा—'और वह दूत कहाँ है?'

'महाराज, वह भी लापता है।'

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बहुत बदहवास-सा वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे—'अरे, तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?'

यमदूत हाथ जोड़कर बोला—'दयानिधान! मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।'

धर्मराज क्रोध से बोले—'मूर्ख जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।'

दूत ने सिर झुकाकर कहा—'महाराज, मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नहीं थी। मेरे इन अभ्यस्त हाथों से अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके, पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल ही हो गया।'

चित्रगुप्त ने कहा—'महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और वे रास्ते में ही रेलवेवाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मौजे रेलवे-अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे-के-डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने, मरने के बाद भी खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया?'

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा—'तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गयी। भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना?'

इसी समय कहीं से घूमते-फिरते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले—'क्यों धर्मराज, कैसे चिन्तित बैठे हैं? क्या नर्क में निवास-स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?'

धर्मराज ने कहा— 'वह समस्या तो कभी की हल हो गयी, मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई ईमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं।'

बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय-योजनाओ का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारे

ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।'

नारद ने पूछा—'उस पर इन्कम-टैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।'

चित्रगुप्त ने कहा— 'इन्कम होता तो टैक्स होता! ... भुखमरा था!'

नारद बोले— 'मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा, मुझे उसका नाम-पता तो बतलाओ। मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।'

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया—'भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार-समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। उम्र लगभग पैंसठ साल सरकरी नौकर था; पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया था, इसलिए मकान-मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत सम्भव है कि अगर मकान-मालिक, वास्तविक मकान-मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफी घूमना पड़ेगा।'

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रंदन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गए।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगाई—'नारायण....नारायण!' लड़की ने देखकर कहा—'आगे जाओ, महाराज।'

नारद ने कहा— 'मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को जरा बाहर भेजो, बेटी।'

भोलाराम की पत्नी बाहर आई। नारद ने कहा—'माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी?'

'क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी था। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे, पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे,

पर वहाँ से या तो जवाब ही नहीं आता था और आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों से मेरे सब गहने बेचकर हमलोग खा गए। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।'

नारद ने कहा—'क्या करोगी, माँ?..उनकी इतनी ही उम्र थी।'

ऐसा तो मत कहो, महाराज। उम्र तो बहुत थी। पचास-साठ रुपया महीना पेंशन मिलती, तो कुछ और काम नहीं करके गुजारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।'

दुख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी नहीं। वह अपने मुद्दे पर आए—'माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी से क्या उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?'

पत्नी बोली—'लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से ही होता है।'

नारद हँसकर बोले—'हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही भ्रम अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा माता, मैं चला।'

व्यंग्य समझने की असमर्थता ने नारद को सती के क्रोध की ज्वाला से बचा लिया।

स्त्री ने कहा—'महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाएगा।'

नारद को दया आ गई थी। वह कहने लगे—'साधुओं की बात कौन मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाऊँगा और कोशिश करूँगा।'

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ्तर में पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला—'भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।'

नारद ने कहा—'भाई , ये बहुत-से पेपरवेट तो रखे हैं इन्हें क्यों नहीं रख दिया ?'

बाबू हँसा—'आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं...खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।'

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पच्चीस-तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आए, तब एक चपरासी ने कहा—'महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए! आप अगर साल-भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जाएगा।'

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। उन्हें एकदम बिना विजटिंग-कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए। बोले—'इसे कोई मंदिर-वंदिर समझ लिया क्या?' धड़धड़ाते चले आए! चिट क्यों नहीं भेजी?'

नारद ने कहा—'कैसे भेजता? चपरासी तो सो रहा है!'

'क्या काम है?'— साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन-केस बतलाया।

साहब बोले—'आप हैं वैरागी; दफ्तरों के रीति-रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। भई, यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है; भेंट चढ़ानी पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं; इन पर वजन रखिए।'

नारद ने सोचा कि फिर वजन की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले-'भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेशन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। हजारों बार एक ही बात को हजार जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है उतनी कीमत की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ,जल्दी भी हो सकती है, मगर...' साहब रुके।

नारद ने कहा—'मगर क्या?'

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा—'मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा हैं, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना-बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूँगा। साधुओं की वीणा तो बड़ी पवित्र होती है। लड़की जल्दी संगीत सीख गई, तो उसकी शादी हो जाएगी।'

नारद अपनी वीणा छिनते देखकर जरा घबराए। पर फिर सँभालकर उन्होंने वीणा टेबल पर रखकर कहा—'यह लीजिए। अब जरा जल्दी उसकी पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।'

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घंटी बजाई। चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया—'बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ!'

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल पर का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा—'क्या नाम बताया, साधुजी, आपने?'

नारद ने समझा कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए जोर से बोल—'भोलाराम।'

सहसा फाइल में से आवाज आई—'कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है क्या? पेंशन का ऑर्डर आ गया?'

साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गए। नारद भी चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए। बोले—'भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो।'

'हाँ' आवाज आई।

नारद ने कहा—'मैं नारद हूँ मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।'

आवाज आई—'मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता!'

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो—

(क) भोलाराम के जीव ने कितने दिन पहले देह त्यागी थी ?

(अ) तीन दिन पहले (आ) चार दिन पहले

(इ) पाँच दिन पहले (ई) सात दिन पहले

(ख) नारद भोलाराम का घर पहचान गए—

(अ) माँ-बेटी के सम्मिलित क्रंदन सुनकर

(आ) उसका टूटा-फूटा मकान देखकर

(इ) घर के बगल में नाले को देखकर

(ई) लोगों से घर का पता पूछकर

(ग) धर्मराज के अनुसार नर्क में इमारतें बनाकर रहनेवालों में कौन शामिल हैं ?

(अ) ठेकेदार (आ) इंजीनियर

(इ) ओवरसीयर (घ) उपर्युक्त सभी

(घ) बड़े साहब ने नारद को भोलाराम के दरख्वास्तों पर वजन रहने की सलाह दी। यहाँ 'वजन' का अर्थ है –

(अ) पेपरवेट (आ) वीणा

(इ) रिश्वत (ई) मिठाई का डब्बा

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) भोलाराम का घर किस शहर में था ?

(ख) भोलाराम को सेवानिवृत हुए कितने वर्ष हुए थे ?

(ग) भोलाराम की पत्नी ने भोलाराम को किस बीमारी का शिकार बताया ?

(घ) भोलाराम ने मकान मालिक को कितने साल से किराया दिया था ?

(ङ) बड़े साहब ने नारद से भोलाराम की पेंशन मंजूर करने के बदले क्या माँगा ?

3. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) 'पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।' – यहाँ किस घटना का संकेत मिलता है ?

(ख) यमदूत ने भोलाराम के जीव के लापता होने के बारे में क्या बताया ?

(ग) धर्मराज ने नर्क में किन-किन लोगों के आने की पुष्टि की ? उनलोगों ने क्या-क्या अनियमितताएँ की थीं ?

(घ) भोलाराम की पारिवारिक स्थिति पर प्रकाश डालो।

(ड.) 'भोलाराम ने दरख्वातें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।'—दफ्तर के बाबू के ऐसा कहने का क्या आशय था।

(च) चपरासी ने नारद को क्या सलाह दी ?

(छ) बड़े साहब ने नारद को भोलाराम के पेंशन केस के बारे में क्या बताया ?

(ज) 'भोलाराम का जीव' नामक व्यंग्यात्मक कहानी समाज में फैले भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी का पर्दाफाश करता है। कहानी के आधार पर पुष्टि करो।

4. **आशय स्पष्ट करो :**

(क) दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं।

(ख) यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है।

1 **भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान**

1. **पाठ में आए निम्नांकित पदों पर ध्यान दो :**

पाप-पुण्य, दान-दक्षिणा, गाना-बजाना, रीति-रिवाज, नाम-पता आदि। प्रत्येक में दो पद हैं और दोनों के बीच योजक (-) चिह्नों का प्रयोग हुआ है। ये पद द्वंद्व समास के उदाहरण हैं। इस प्रकार द्वंद्व समास के दोनों पद प्रधान होते हैं। इसके तीन भेद हैं—(1) इतरेतर द्वंद्व (2) समाहार द्वंद्व और (3) वैकल्पिक द्वंद्व।

(क) इतरेतर द्वंद्व समास में सभी पद 'और' से जुड़े होते हैं। जैसे—भाई-बहन (भाई और बहन)। राम-कृष्ण (राम और कृष्ण)। इस प्रकार के समास का प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है।

(ख) समाहार द्वंद्व समास के दोनों पद 'समुच्चयबोधक' से जुड़े होने पर भी अलग-अलग समूह का अस्तित्व न रखकर समूह का बोध कराते हैं। जैसे—दाल-रोटी (दाल और रोटी) अर्थात् भोजन के सभी पदार्थ, हाथ-पाँव (हाथ और पाँव) अर्थात् हाथ और पाँव सहित शरीर के दूसरे अंग भी।

(ग) जिस समास में दो पदों के बीच 'या', 'अथवा' आदि विकल्प छिपे होते हैं, उसे वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास में अक्सर विपरीत अर्थ वाले शब्द जुड़े होते हैं। जैसे—पाप-पुण्य, भला-बुरा, दिन-रात।

अब नीचे दिए गए द्वंद्व समासों के भेद लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करो :
खाना-पीना, माँ-बाप, घर-द्वार, रुपया-पैसा, भात-दाल, सीता-राम, नाक-कान, थोड़ा-बहुत, ठंडा-गरम, उत्थान-पतन, आकाश-पाताल

2. दिए गए वाक्य को ध्यान से पढ़ो :

'क्या बताऊँ ? भोलाराम को गरीबी की बीमारी थी।'—इस वाक्य में 'गरीबी' और 'बीमारी' शब्द भाववाचक संज्ञाएँ हैं, जो क्रमश: 'गरीब' और 'बीमार' विशेषण शब्दों से बने हैं। भाववाचक संज्ञाएँ किसी व्यक्ति वस्तु अथवा स्थान के गुण, धर्म, दशा अथवा स्वभाव का बोध कराती हैं। ये क्रमश: जातिवाचक संज्ञा से, विशेषण से, क्रिया से, सर्वनाम से तथा अव्यय से बनती हैं। जैसे—

लड़का	–	लड़कपन (जातिवाचक संज्ञा से)
गर्म	–	गर्मी (विशेषण से)
लिखना	–	लिखावट (क्रिया से)
अपना	–	अपनापन (सर्वनाम से)
समीप	–	सामीप्य (अव्यय से)

अब पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के भाववाचक संज्ञा बनाओ :
गरीब, असमर्थ, खराब, त्यागी, तलाश, बहुत, गृहस्थ, कारीगर, अभ्यस्त, मूर्ख, परेशान, नेता, चिल्लाना, वास्तविक, बीमार, ऊँचा

1 **योग्यता-विस्तार :**

1. हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'पगडंडियों का जमाना' तथा 'कबीरा आप ठगाइए' नामक व्यंग्यात्मक निबंध पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो।
2. धर्मराज मनुष्यों के पाप-पुण्य का फैसला करते हैं। अपने कर्मों के अनुसार मनुष्य को स्वर्ग या नर्क में स्थान मिलता है। यह कथन कहाँ तक सत्य है। इस विषय में तर्क सहित अपना विचार प्रस्तुत करो।

1 **यह भी जानें :**

सरकारी सेवाओं के मामले में रिश्वत लेना और देना कानूनन अपराध है। उपभोक्ता एवं सूचना अधिकारों के द्वारा आरोपी कर्मचारी और अधिकारी को सरकारी कानून के तहत दंडित किए जाने का प्रावधान है। इस विषय में हमें जागरुक होने की आवश्यकता है।

1 शब्दार्थ एवं टिप्पणी

अलॉट = आवंटन कराना

रिकार्ड = लेखा-जोखा, अभिलेख

यमदूत = यमराज के दूत

विकृत = विरूप, अस्वाभाविक रूप

कसर = प्रयास, प्रयत्न

अभ्यास = आदी

बदहवास = डरा हुआ

इन्द्रजाल = हाथ की सफाई, जादू का खेल

गुमसुम = चुपचाप

हौजरी = कपड़ा मिल

नगण्य = जिसे गिना न जा सके

पार्सल = डाक अथवा रेलवे द्वारा वस्तुओं का भेजा जाना

दीन = गरीब, दुखिया

गुणी = गुणवान व्यक्ति

तलाश = खोज

रिटायर = सेवानिवृत्त होना, अवकाशप्राप्त करना

क्रंदन = रोना, रूदन

इनकम टैक्स = आयकर

दरख्वास्त = प्रार्थनापत्र

फाका = उपवास करना, भूखमरी

सती = पतिव्रता स्त्री

सिद्ध पुरुष = सिद्धियों को वश में करने वाला, कहा जाता है कि सिद्धियाँ आठ प्रकार की होती है।

स्टेशनरी = लेखन सामग्री, कागज-कलम आदि

पेपरवेट = कागजों अथवा प्रार्थनापत्रों को देखकर रखा जाने वाला काँच का गोला, यहाँ रिश्वत के अर्थ का द्योतक है

वीणा = एक प्रकार का वाद्य-यंत्र

ऊँचा सुनना = कुछ कम सुनना

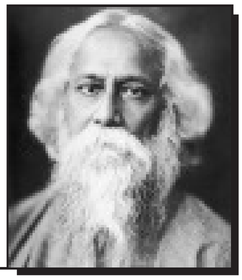

5 रवींद्रनाथ ठाकुर
(1861—1941)

'विश्व-कवि' की आख्या से विभूषित गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर उन प्रात: स्मरणीय मनीषियों की परंपरा में आते हैं, जिन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अपने समग्र रूप में चित्रित किया। आपने अपनी रचनाओं में न सिर्फ भारत की गौरवमयी सभ्यता-संस्कृति को अभिव्यक्ति दी, बल्कि विश्व मानवतावादी दृष्टि से पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति के उज्ज्वल तत्वों को अपनाने का आह्वान भी किया। आप मूलत: बांग्ला के कवि-कलाकार थे, परन्तु अपनी उदारवादी मानवतावादी दृष्टि के कारण आपने क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता का, फिर राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर अंतर्राष्ट्रीयता एवं विश्वबंधुत्व का स्पर्श किया। इस प्रकार वे पहले बंगाल के, फिर भारतवर्ष के और फिर संपूर्ण विश्व के चहेते बने।

कवि-गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, 1861 ई. को कोलकाता के जोरासाँको में एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित बांग्ला परिवार में हुआ था। आपके पिता देवेंद्रनाथ ठाकुर जी दार्शनिक प्रवृत्ति के प्रख्यात समाज-सुधारक थे। रवींद्रनाथ ठाकुर की शिक्षा-दीक्षा मुख्यत: घर पर ही हुई। काव्य, संगीत, चित्रकला, आध्यात्मिक चिंतन, सामाजिक सुधार एवं राजनीतिक सुरुचि का वातावरण उन्हें परंपरा और परिवार से मिला। उन्होंने प्रकृति एवं जीवन की खुली पुस्तक को लगन के साथ पढ़ा। स्वाध्याय के बल पर आपने विविध विषयों का विपुल ज्ञान प्राप्त कर लिया। सत्रह वर्ष की अवस्था में आप इंग्लैंड गए। वहाँ आपको कई सुप्रतिष्ठित अंग्रेज कवि-साहित्यकारों का सान्निध्य प्राप्त हुआ और वे पश्चिमी विचारधारा के आलोक से दीप्त होकर स्वदेश वापस आए।

काव्य प्रतिभा के धनी रवींद्रनाथ ठाकुर ने सात वर्ष की कोमल अवस्था में ही कविता लिखना आरंभ कर दिया था। तब से लेकर देहावसान के समय तक आपकी अमर लेखनी बराबर चलती रही। आपने कई हजार कविताओं, गीतों, कहानियों, रूपकों (भावनाट्य) एवं निबंधों की रचना की। आपने उपन्यास भी लिखे, जिनमें '**गोरा**' और '**घरे बाइरे**' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपके द्वारा रचित कहानियों में से 'काबुलीवाला' एक कालजयी कहानी है। कवि-शिरोमणि रवींद्रनाथ ठाकुर की कीर्ति का आधार-स्तंभ

है उनका काव्य-ग्रंथ '**गीतांजलि**', जिस पर आपको सन् 1913 ई. में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। आपकी अन्य रचनाओं में '**मानसी**', '**संध्या-संगीत**', '**नैवेद्य**', '**बलाका**', '**क्षणिका**' आदि अन्यतम हैं। आपके द्वारा विरचित सैकड़ों गीतों से **रवींद्र-संगीत** नामक एक निराली संगीत-धारा ही बह निकली है। आपके द्वारा रचित 'जन गण मन....' भारतवर्ष का राष्ट्रीय संगीत है, तो आपकी ही रचना 'आमार सोणार बांग्ला' पड़ोसी राष्ट्र बांग्लादेश का राष्ट्रीय संगीत है।

कवि-गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर ने पश्चिम बंगाल में बोलपुर के निकट 'शांतिनिकेतन' नाम के एक शैक्षिक-सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना की थी। यह केन्द्र गुरुदेव के सपनों का मूर्त रूप रहा और आगे यह विश्व-भारती विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ। आपने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भी रुचि ली थी। शांतिनिकेतन में आने पर मोहनदास करमचंद गाँधी को आपने 'महात्मा' के रूप में संबोधित किया था। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के पक्ष में अपना मत देते हुए गुरुदेव ने कहा था-''उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिन्दी।'' 7 अगस्त, 1941 ई. को इस महान पुण्यात्मा का स्वर्गवास हुआ।

*कवि, गीतकार, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार, संगीतकार, कलाकार, समाज-सुधारक, शिक्षा-संस्कृतिप्रेमी और राजनीतिज्ञ की बहुमुखी प्रतिभा के अधिकारी होते हुए भी गुरुदेव रवींद्रनाथ मूलत: कवि-हृदय के थे। उनके कोमल हृदय में अगर विश्वमानवता के प्रति प्रेम, करुणा और सहानुभूति थी, तो मानवेतर प्राकृतिक उपकरणों, जैसे— पेड़-पौधे, नदी-निर्झर, पशु-पक्षी, वन-उपवन, फूल-तारे, सूरज-चाँद आदि के प्रति भी भरपूर आकर्षण था। उनकी सूक्ष्म एवं पैनी दृष्टि जड़ और चेतन दोनों प्रकार के पदार्थों के अंतरतम तक पहुँच जाती थी। आपके द्वारा रचित '**सड़क की बात**' वस्तुत: सड़क की आत्मकथा है। लेखक ने इसमें सड़क का मानवीकरण किया है। सड़क अपनी आप-बीती अथवा राम-कहानी स्वयं सुना रही है। दरअसल इस पाठ में लेखक ने अपनी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से सड़क के अंतरतम का निरीक्षण करके उसकी आकांक्षा, स्थिति एवं उनके मनोभावों का ऐसा मार्मिक चित्रण किया है कि सड़क की बातें जीवंत हो उठी हैं। यह एक मनोरम आत्मकथात्मक निबंध है। इसमें सड़क की बातों के जरिए मानव जीवन की कई महत्वपूर्ण बातें भी उजागर हुई हैं।*

सड़क की बात

मैं सड़क हूँ। शायद किसी के शाप से चिरनिद्रित सुदीर्घ अजगर की भाँति वन-जंगल और पहाड़-पहाड़ियों से गुजरती हुई पेड़ों की छाया के नीचे से और दूर तक फैले हुए मैदानों में ऊपर से देश-देशांतरों को घेरती हुई बहुत दिनों से बेहोशी की नींद सो रही हूँ। जड़ निद्रा में पड़ी-पड़ी मैं अपार धीरज के साथ अपनी धूल में लोटकर शाप की आखिरी घड़ियों का इंतजार कर रही हूँ। हमेशा से जहाँ-तहाँ स्थिर हूँ, अविचल हूँ, हमेशा से एक ही करवट सो रही हूँ, इतना भी सुख नहीं कि अपनी इस कड़ी और सूखी सेज पर एक भी मुलायम हरी घास या दूब डाल सकूँ। इतनी भी फुरसत नहीं कि अपने सिरहाने के पास एक छोटा-सा नीले रंग का वनफूल भी खिला सकूँ।

मैं बोल नहीं सकती पर अंधे की तरह सब कुछ महसूस कर सकती हूँ। दिन-रात पैरों की ध्वनि, सिर्फ पैरों की आहट सुना करती हूँ। अपनी इस गहरी जड़ निद्रा में लाखों चरणों के स्पर्श से उनके हृदयों को पढ़ लेती हूँ, मैं समझ जाती हूँ कि कौन घर जा रहा है, कौन परदेश जा रहा है, कौन काम से जा रहा है, कौन आराम करने जा रहा है, कौन उत्सव में जा रहा है और कौन श्मशान को जा रहा है। जिसके पास सुख की घर-गृहस्थी है, स्नेह की छाया है, वह हर कदम पर सुख की तस्वीर खींचता है, आशा के बीज बोता है। जान पड़ता है, जहाँ-जहाँ उसके पैर पड़ते हैं, वहाँ-वहाँ क्षण भर में मानो एक-एक लता अंकुरित और पुष्पित हो उठेगी। जिसके पास घर नहीं, आश्रय नहीं, उसके पदक्षेप में न आशा है, न अर्थ है, उसके कदमों में न दायाँ है, न बायाँ है, उसके पैर कहते हैं, मैं चलूँ तो क्यों, और ठहरूँ तो किसलिए? उसके कदमों से मेरी सुखी हुई धूल मानो और सूख जाती है।

संसार की कोई भी कहानी मैं पूरी नहीं सुन पाती। आज सैकड़ों-हजारों वर्षों से मैं लाखों-करोड़ों लोगों की कितनी हँसी, कितने गीत, कितनी बातें

सुनती आई हूँ। पर थोड़ी-सी बात सुन पाती हूँ। बाकी सुनने के लिए जब कान लगाती हूँ तब देखती हूँ कि वह आदमी ही नहीं रहा । इस तरह न जाने कितने युगों की कितनी टूटी-फूटी बातें और बिखरे हुए गीत मेरी धूल के साथ धूल बन गए हैं और धूल बनकर अब भी उड़ते रहते हैं।

वह सुनो गा रही है—कहते-कहते कह नहीं पाई । आह, ठहरो, जरा गीत को पूरा कर जाओ, पूरी बात तो सुन लेने दो मुझे, पर कहाँ ठहरी वह? गाते-गाते न जाने कहाँ चली गई? आखिर तब मैं सुन ही नहीं पाई । बस आज आधी रात तक उसकी पग-ध्वनि मेरे कानों में गूँजती रहेगी। मन ही मन सोचूँगी कौन थी वह? कहाँ जा रही थी न जाने? जो बात न कह पाई उसी को फिर कहने गई । अब की बार जब फिर उससे भेंट होगी, वह जब मुँह उठाकर इसके मुँह की तरफ ताकेगा, तब ''कहते-कहते'' फिर ''कह नहीं पाई'' तो?

समाप्ति और स्थायित्व शायद कहीं होगा, पर मुझे तो नहीं दिखाई देता। एक चरण चिह्न को भी तो मैं ज्यादा देर तक नहीं रख सकती। मेरे ऊपर लगातार चरण-चिह्न पड़ रहे हैं, पर नए पाँव आकर पुराने चिह्नों को पोंछ जाते हैं। जो चला जाता है वह तो पीछे कुछ छोड़ ही नहीं जाता। कदाचित उसके सिर के बोझ से कुछ मिलता भी है तो हजारों चरणों के तले लगातार कुचला जाकर कुछ ही देर में वह धूल में मिल जाता है।

मैं किसी का भी लक्ष्य नहीं हूँ। सबका उपाय मात्र हँ। मैं किसी का घर नहीं हूँ, पर सबको घर ले जाती हूँ। मुझे दिन-रात यही संताप सताता रहता है कि मुझ पर कोई तबीयत से कदम नहीं रखना चाहता। मुझ पर कोई खड़ा रहना पसंद नहीं करता। जिनका घर बहुत दूर है, वे मुझे ही कोसते हैं और शाप देते रहते हैं । मैं जो उन्हें परम धैर्य के साथ उनके घर के द्वार तक पहुँचा देती हूँ, इसके लिए कृतज्ञता कहाँ पाती हूँ? वे अपने घर आराम करते हैं, घर पर आनंद मनाते हैं, घर में उनका सुख-सम्मिलन होता है, बिछुड़े हुए सब मिल जाते हैं, और मुझ पर केवल थकावट का भाव दरसाते हैं, केवल अनिच्छाकृत श्रम हुआ समझते हैं, मुझे केवल विच्छेद का कारण मानते हैं।

क्या इसी तरह बार–बार दूर ही से घर के झरोखे में से पंख पसार कर बाहर आती हुई मधुर हास्य–लहरी मेरे पास आते ही शून्य में विलीन हो जाया करेगी ? घर के उस आनंद का एक कण भी, एक बूँद भी मैं नहीं पाऊँगी ?

कभी–कभी वह भी पाती हूँ। छोटे–छोटे बच्चे जो हँसते–हँसते मेरे पास आते हैं और शोरगुल मचाते हुए मेरे पास आकर खेलते हैं, अपने घर का आनंद वे मेरे पास ले आते हैं। उनके पिता का आशीर्वाद और माता का स्नेह घर से बाहर निकल कर, मेरे पास आकर सड़क पर ही मानो अपना घर बना लेता है। मेरी धूल में वे स्नेह दे जाते हैं, प्यार छोड़ जाते हैं। मेरी धूल को वे अपने वश में कर लेते हैं और अपने छोटे–छोटे कोमल हाथों से उसकी ढेरी पर हौले–हौले थपकियाँ दे–देकर परम स्नेह से उसे सुलाना चाहते हैं। अपना निर्मल हृदय लेकर बैठे–बैठे वे उसके साथ बातें करते हैं। हाय–हाय, इतना स्नेह, इतना प्यार पाकर भी मेरी यह धूल उसका जवाब तक नहीं देत पाती । मेरे लिए कैसा शाप है यह!

छोटे–छोटे कोमल पाँव जब मेरे ऊपर से चले जाते हैं, तब अपने को मैं बड़ी कठिन अनुभव करती हूँ, मालूम होता है उनके पाँवों में लगती होगी। उस समय मुझे कुसुम कली की तरह कोमल होने की साध होती है। अरुण चरण ऐसी कठोर धरती पर क्यों चलते हैं? किंतु, यदि न चलते तो शायद कहीं भी हरी–हरी घास पैदा न होती।

प्रतिदिन नियमित रूप से जो मेरे ऊपर चलते हैं, उन्हें मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ। पर वे नहीं जानते कि उनके लिए मैं कितनी प्रतीक्षा किया करती हूँ। मैं मन ही मन कल्पना कर लेती हूँ। बहुत दिन हुए, ऐसी ही एक प्रतिमा अपने कोमल चरणों को लेकर दोपहर को बहुत दूर से आती, छोटे–छोटे दो नूपुर रूनझुन करके उसके पाँव में रो–रोकर बजते रहते। शायद उसके ओठ बोलने के ओठ न थे, शायद उसकी बड़ी–बड़ी आँखें संध्या के आकाश की भाँति म्लान दृष्टि से किसी के मुँह की ओर देखती रहती।

ऐसे कितने ही पाँवों के शब्द नीरव हो गए हैं। मैं क्या उनकी याद रख सकती हूँ? सिर्फ उन पाँवों की करुण नूपुर–ध्वनि अब भी कभी–कभी याद

आ जाती है। पर मुझे क्या घड़ी भर भी शोक या संताप करने की छुट्टी मिलती है ? शोक किस-किसके लिए करें ? ऐसे कितने ही आते हैं और चले जाते हैं।

उफ कैसा कड़ा घाम है ! एक बार साँस छोड़ती हूँ और तपी हुई धूल सुनील आकाश को धुआँधार करके उड़ी चली जाती है। अमीर और गरीब, जन्म और मृत्यु सब कुछ मेरे ऊपर एक ही साँस में धूल के स्रोत की तरह उड़ता चला जा रहा है। इसलिए सड़क के न हँसी है, न रोना। मैं अपने ऊपर कुछ भी पड़ा रहने नहीं देती, न हँसी, न रोना, सिर्फ मैं ही अकेली पड़ी हुई हूँ, और पड़ी रहूँगी।

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. **एक शब्द में उत्तर दो :**
   - (क) गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर किस आख्या से विभूषित हैं ?
   - (ख) रवींद्रनाथ ठाकुर जी के पिता का नाम क्या था ?
   - (ग) कौन-सा काव्य-ग्रंथ रवींद्रनाथ ठाकुर जी की कीर्ति का आधार-स्तंभ है ?
   - (घ) सड़क किसकी आखिरी घड़ियों का इंतजार कर रही है ?
   - (ङ) सड़क किसकी तरह सब कुछ महसूस कर सकती है ?
2. **पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :**
   - (क) कवि-गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म कहाँ हुआ था ?
   - (ख) गुरुदेव ने कब मोहनदास करमचंद गाँधी को 'महात्मा' के रूप में संबोधित किया था ?
   - (ग) सड़क के पास किस कार्य के लिए फुरसत नहीं है ?
   - (घ) सड़क ने अपनी निद्रावस्था की तुलना किससे की है ?
   - (ङ) सड़क अपनी कड़ी और सूखी सेज पर क्या नहीं डाल सकती ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :**

(क) रवींद्रनाथ ठाकुर जी की प्रतिभा का परिचय किन क्षेत्रों में मिलता है?

(ख) 'शांतिनिकेतन' के महत्व पर प्रकाश डालो।

(ग) सड़क शाप-मुक्ति की कामना क्यों कर रही है?

(घ) सुख की घर-गृहस्थी वाले व्यक्ति के पैरों की आहट सुनकर सड़क क्या समझ जाती है?

(ङ) गृहहीन व्यक्ति के पैरों की आहट सुनने पर सड़क को क्या बोध होता है?

(च) सड़क अपने ऊपर पड़े एक चरण-चिह्न को क्यों ज्यादा देर तक नहीं देख सकती?

(छ) बच्चों के कोमल पाँवों के स्पर्श से सड़क में कौन-से मनोभाव बनते हैं?

(ज) किसलिए सड़क को न हँसी है, न रोना?

(झ) राहगीरों के पाँवों के शब्दों को याद रखने के संदर्भ में सड़क ने क्या कहा है?

4. **संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :**

(क) जड़ निद्रा में पड़ी सड़क लाखों चरणों के स्पर्श से उनके बारे में क्या-क्या समझ जाती है?

(ख) सड़क संसार की कोई भी कहानी क्यों पूरी नहीं सुन पाती?

(ग) ''मैं किसी का भी लक्ष्य नहीं हूँ। सबका उपाय मात्र हूँ।'' -सड़क ने ऐसा क्यों कहा है?

(घ) सड़क कब और कैसे घर का आनंद कभी-कभी महसूस करती है?

(ङ) सड़क अपने ऊपर से नियमित रूप से चलने वालों की प्रतीक्षा क्यों करती है?

5. **सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :**

(क) सड़क का कौन-सा मनोभाव तुम्हें सर्वाधिक हृदयस्पर्शी लगा और क्यों?

(ख) सड़क ने अपने बारे में जो कुछ कहा है, उसे संक्षेप में प्रस्तुत करो।

(ग) सड़क की बातों के जरिए मानव जीवन की जो बातें उजागर हुई हैं, उन पर संक्षिप्त प्रकाश डालो।

6. **सप्रसंग व्याख्या करो :**

(क) ''अपनी इस गहरी जड़ निद्रा में लाखों चरणों के स्पर्श से उनके हृदयों को पढ़ लेती हूँ।''

(ख) ''मुझे दिन-रात यही संताप सताता रहता है कि मुझ पर कोई तबीयत से कदम नहीं रखना चाहता।

(ग) ''मैं अपने ऊपर कुछ भी पड़ा रहने नहीं देती, न हँसी, न रोना, सिर्फ मैं ही अकेली पड़ी हुई हूँ और पड़ी रहूँगी।

❖ भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का नाम लिखो :**
दिन-रात, जड़निद्रा, पग-ध्वनि, चौराहा, प्रतिदिन, आजीवन, अविल, राहखर्च, पथभ्रष्ट, नीलकंठ, महात्मा, रातोंरात

2. **निम्नांकित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाओ :**
परा, अप, अधि, उप, अभि, अति, सु, अव

3. **निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को अलग करो :**
अनुभव, बेहोश, परदेश, खुशबू, दुर्दशा, दुस्साहस, निर्दय

4. **निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :**
सड़क, जंगल, आनंद, घर, संसार, माता, आँख, नदी

5. **विपरीतार्थक शब्द लिखो :**
मृत्यु, अमीर, शाप, छाया, जड़, आशा, हँसी, आरंभ, कृतज्ञ, पास, निर्मल, जवाब, सूक्ष्म, धनी, आकर्षण

6. **संधि-विच्छेद करो :**
देहावसान, उज्ज्वल, रवींद्र, सूर्योदय, सदैव, अत्यधिक, जगन्नाथ, उच्चारण, संसार, मनोरथ, आशीर्वाद, दुस्साहस, नीरस

❖ योग्यता-विस्तार

(1) रवींद्रनाथ ठाकुर जी द्वारा रचित किसी अन्य निबंध अथवा कहानी का संग्रह करके पढ़ो और उसका सार अपने सहपाठियों को बताओ।

(2) 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि'- इस कहावत पर ध्यान रखते हुए कवि-सामर्थ्य पर कक्षा में चर्चा करो।

(3) 'सड़क की बात' की तरह ही 'पत्थर की बात' शीर्षक के अंतर्गत पत्थर की आत्मकथा लिखो।

(4) 'नोबेल पुरस्कार' और 'शांतिनिकेतन' के बारे में जानकारी एकत्र करो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

शाप	= वह शब्द या वाक्य जो किसी अनिष्ट की कामना से कहा जाए
बेहोशी	= अचेतन अवस्था
मुलायम	= कोमल
सिरहाना	= बिस्तर पर सिर रखने का स्थान
पदक्षेप	= जमीन पर पाँव रखने का कार्य
संताप	= मन का दुख
कोसना	= गाली देना, भला-बुरा कहना
हास्य-लहरी	= हँसी की तरंगें
साध	= इच्छा, कामना
घाम	= सूर्य का ताप, धूप
चिर निद्रित	= सदा सोया हुआ
देशांतर	= अन्य देश, अन्य स्थान
सेज	= शय्या, बिस्तर
फुरसत	= खाली समय, अवकाश
तस्वीर	= चित्र, छवि
सैकड़ों	= सौ-सौ
आखिर	= अंत में
तबीयत से	= स्थिर और चिंतामुक्त होकर
कृतज्ञता	= किसी के उपकार को मानने का भाव
हौले-हौले	= धीरे-धीरे
अरुण	= लाल
धुआँधार	= धुएँ से भरा, काला

6

चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

विचारों और भावों के आदान-प्रदान मानव के लिए एक अपरिहार्य सामाजिक कार्य है। पहले यह कार्य मौखिक रूप से संपन्न होता था। कालान्तर में लिपि के विकास होने के पश्चात लिखित रूप में यह कार्य होने लगा। 'पत्र लेखन' इसी की एक कड़ी है। प्राचीन काल से ही संदेश के आदान-प्रदान के लिए पत्रों का व्यवहार राजकीय और पारिवारिक क्षेत्रों में होता रहा है। संदेश वाहक के रूप में पत्र का पत्र-वाहक के रूप में कबूतर, हरकारा, डाकिया आदि का महत्व बढ़ने लगा। धीरे-धीरे पत्रों का ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व भी बढ़ा। परन्तु युग परिवर्तन के साथ-साथ तथा सूचना प्रौद्योगिकी के कारण पत्रों के आदान-प्रदान में कुछ कमी आयी। टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, ई-मेल, इंटरनेट आदि नए-नए माध्यमों के कारण पत्रों का व्यवहार कम होने लगा। परन्तु यह विचारणीय है कि जो अनुभूति और भाव पत्रों से जुड़े होते हैं, वे आधुनिक संचार माध्यमों में भी उसी प्रकार प्राप्त होते हैं या नहीं। गौर से देखने पर यह अनुभूत होता है कि पत्र में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो नए संचार माध्यमों में परिलक्षित नहीं होते। इस लिए पत्रों का महत्व अभी बरकरार है। प्रस्तुत लेख में लेखक श्री अरविंद कुमार सिंह ने इसी तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया है।

पत्रों की दुनिया भी अजीबो-गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नई घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है। पत्रों का भाव सब जगह एक-सा है, भले

ही उसका नाम अलग-अलग हो। पत्र को उर्दू में खत, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उत्तरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में कडिद कहा जाता है। पत्र यादों को सहेज कर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि— ''हजारों सालों तक संचार का साधन केवल हरकारे (रनर्स) या फिर तेज घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलेस और आगे रेडार—दुनिया बदल रहा है।''

पिछली शताब्दी में पत्र लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से भी काफी प्रयास किए। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया। यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार साधनों के तेज विकास तथा अन्य कारणों से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है, पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है। फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ने चिट्ठियों की तेजी को रोका है पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाएँ तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतजार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतजार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक

दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतजार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन साधनों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता साधन चिट्ठी ही थी पर आज और भी साधन विकसित हो चुके हैं।

आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और संजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े-बड़े लेखक, पत्रकारों, उद्यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान, इनकी पत्र रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते, पर तब *पिता के पत्र पुत्री के नाम* नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेजकर रख लेते हैं पर एसएमएस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेज कर रख सकते हैं ? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी-मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने-समझने का असली पैमाना है। भारत में आजादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज अफसरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखे, वे आगे चलकर बहुत महत्व की पुस्तक तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी जमीनी मजबूती लिए हुए था।

महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी-इंडिया लिखे आते थे और वे जहाँ भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे। आजादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ भी ऐसा ही था। गांधी जी के पास देश-दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज्यादातर पत्रों का जवाब देते थे। जब लिखते-लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाएँ हाथ से लिखने में जुट जाते थे। महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव-गाँव में मिल

जाते हैं। पत्र भेजने वाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है। यह है पत्रों का जादू। यही नहीं, पत्रों के आधार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज से कम नहीं हैं। *पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम* और *निराला के पत्र हमको लिख्यौ है कहा* तथा *पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती* समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएँगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खास तौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे बहुत मुस्तैद रहते थे। इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा-जोखा मिलता है।

पत्र व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आजादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी एक खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर-घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत साधनों के बाद भी चिट्ठी-पत्री की हैसियत बरकरार है। शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पट्टियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फवारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही सबसे अधिक बेसब्री से इंतजार होता है। एक दो नहीं, करोड़ों लोग खतों और अन्य सेवाओं के लिए रोज भारतीय डाकघरों के दरवाजों तक पहुँचते हैं और इसकी बहु आयामी भूमिका नजर आ रही है। दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

- *श्री अरविंद कुमार सिंह*

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) पत्र को उर्दू में क्या कहा जाता है ?

(अ) खत (आ) चिट्ठी

(इ) कागद (ई) लेख

(ख) पत्र लेखन है—

(अ) एक तरीका (आ) एक व्यवस्था

(इ) एक कला (ई) एक रचना

(ग) विश्व डाक संघ ने पत्र लेखन की प्रतियोगिता शुरू की—

(अ) सन् 1970 से (आ) सन् 1971 से

(इ) सन् 1972 से (ई) सन् 1973 से

(घ) महात्मा गाँधी के पास दुनियाभर से तमाम पत्र किस पते पर आते थे—

(अ) मोहन दास करमचन्द गाँधी—भारत

(आ) महात्मा गाँधी—भारत

(इ) बापू जी—इंडिया

(ई) महात्मा गाँधी—इंडिया

(ड.) तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा गुडविल किसकी है—

(अ) रेल विभाग (आ) डाक विभाग

(इ) शिक्षा विभाग (ई) गृह विभाग

2. संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) पत्र ऐसा क्या काम कर सकता है, जो संचार का आधुनिकतम साधन भी नहीं कर सकता ?

(ख) चिट्ठियों की तेजी अन्य किन साधनों के कारण बाधा प्राप्त हुई है ?

(ग) पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता ?

(घ) गाँधीजी के पास देश-दुनिया से आये पत्रों का जवाब वे किस प्रकार देते थे ?

(ङ) कैसे लोग अब भी बहुत ही उत्सुकता से पत्रों का इंतजार करते हैं ?

3. उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) पत्र को खत, कागद, उत्तरम, लेख इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताओ।

(ख) पाठ के अनुसार भारत में रोज कितनी चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती है और इससे क्या साबित होता है ?

(ग) क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं ?

(घ) किनके पत्रों से यह पता चलता है कि आजादी की लड़ाई बहुत ही मजबूती से लड़ी गयी थी ?

(ङ) संचार के कुछ आधुनिक साधनों के नाम उल्लेख करो।

4. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए ?

(ख) वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज से कम नहीं है—कैसे ?

(ग) भारतीय डाकघरों की बहुआयामी भूमिका पर आलोकपात करो।

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. केवल 'पत्र' कहने से सामान्यत: चिट्ठियों के बारे में ही समझा जाता है। परंतु अन्य शब्दों के साथ संयोग से पत्र का अर्थ बदल जाता है, जैसे समाचार पत्र। अब पत्र शब्द के योग से बनने वाले पाँच शब्द लिखो।
2. 'व्यापारिक' शब्द व्यापार के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। 'इक' प्रत्यय के योग से बनने वाले पाँच शब्द पुस्तक से खोजकर लिखो।
3. दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं, जैसे—रवीन्द्र = रवि + इन्द्र। इस संधि में इ + इ = ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। संधियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि और यण।

   ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के साथ ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, आ आए तो ये आपस में मिलकर क्रमश: दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं, इसी कारण इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं, जैसे - संग्रह + आलय = संग्रहालय, महा + आत्मा = महात्मा।

इस प्रकार के दस उदाहण खोजकर लिखो और अपने शिक्षक को दिखाओ।

❖ योग्यता विस्तार :

1. पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए उपाय सुझाते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखो।
2. पुस्तकालय में खोजकर जवाहरलाल नेहरू द्वारा इंदिरा गांधी को लिखे गये पत्रों का संग्रह 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पढ़ो और उन पत्रों में वर्णित विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त करके मित्रों के साथ चर्चा करो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

अजीबो गरीब	=	अनोखा
एसएमएस	=	लघु संदेश सेवा
सिलसिला	=	आरंभ होना, रास्ता खुलना
अहमियत	=	महत्व
हरकारा	=	दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
आवाजाही	=	आना-जाना
तह	=	गहराई
प्रशस्ति पत्र	=	प्रशंसा पत्र
मुस्तैद	=	तत्पर
दस्तावेज	=	प्रमाण संबंधी कागजात, प्रमाणपत्र
गुडविल	=	सुनाम, अच्छी छवि
हैसियत	=	दरजा
आलीशान	=	शानदार
ढाँणी	=	अस्थायी निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो

पद्य खण्ड

जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।

(कविता क्या है, आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

7

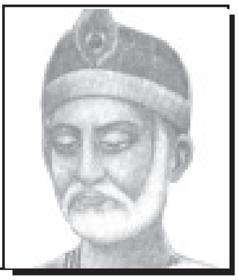

कबीरदास
(1398—1518)

हिंदी के जिन भक्त-कवियों की वाणी आज भी प्रासंगिक है, उनमें संत कबीरदास जी अन्यतम हैं। उन्होंने आम जनता के बीच रहकर जनता की सरल-सुबोध भाषा में जनता के लिए उपयोगी काव्य की रचना की। आपकी कविताओं में भक्ति भाव के अलावा व्यावहारिक ज्ञान एवं मानवतावादी दृष्टि का समावेश हुआ है। आपकी कविताएँ अपने समय में बड़ी लोकप्रिय थीं। इसी लोकप्रियता को लक्षित करके असम-भूमि के श्रीमंत शंकरदेव ने अपने ग्रंथ 'कीर्तन घोषा' में लिखा है कि उरेषा, वाराणसी इत्यादि स्थानों पर साधु संत लोग कबीर विरचित गीत-पद गाते हैं :

उरेषा वारानसी ठावे ठावे।
कबिर गीत शिष्टसवे गावे॥ *(कीर्तन घोषा -3/32)*

महात्मा कबीरदास की रचनाएँ अपने समय में भी लोकप्रिय थीं, आज भी वे लोकप्रिय हैं और यह लोकप्रियता आगे भी बनी रहेगी। कविताओं की तरह उनकी जीवन-गाथा भी अत्यंत रोचक है। कहा जाता है कि स्वामी रामानंद के आशीर्वाद के फलस्वरूप सन् 1398 में काशी में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से आपका जन्म हुआ था। लोक-लज्जा के कारण जन्म के तुरंत बाद माँ ने इस दिव्य बच्चे को लहरतारा नामक स्थान के एक तालाब के किनारे छोड़ दिया था। वहाँ से गुजरते हुए नीरू और नीमा नामक मुसलमान जुलाहे दंपति को वह बालक मिला। खुदा का आशीर्वाद समझकर उन्होंने उस दिव्य बालक को गोद में उठा लिया। उन्होंने बालक का नाम रखा कबीर और उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। 'कबीर' शब्द का अर्थ है-बड़ा, महान, श्रेष्ठ। आगे चलकर कबीरदास जी सचमुच बड़े संत, श्रेष्ठ भक्त और महान कवि बने। सन् 1518 में मगहर स्थान में आपका देहावसान हुआ।

संत कबीरदास जी स्वामी रामानंद के योग्य शिष्य थे। वे इस संसार के रोम-रोम में रमने वाले, प्रत्येक अणु-परमाणु में बसने वाले निर्गुण निराकार 'राम' की आराधना करते थे। उन्होंने पालक पिता-माता नीरू-नीमा की आजीविका को ही अपनाया था।

कर्मयोगी कबीरजी जुलाहे का काम करते-करते अपने आराध्य के गीत गाया करते थे। अपने काम-काज के सिलसिले में घूमते-फिरते थे। वे लोगों को तरह-तरह के उपदेश देते थे। परवर्ती समय में शिष्यों ने उनकी अमृतोपम वाणियों को लिखित रूप प्रदान किया। महात्मा कबीरदास की रचनाएँ **बीजक** नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके तीन भाग हैं-**साखी, सबद** और **रमैनी**।

भाषा पर कबीरदास जी का भरपूर अधिकार था। उनकी काव्य भाषा वस्तुतः तत्कालीन हिंदुस्तानी है, जिसे विद्वानों ने 'सधुक्कड़ी', 'पंचमेल खिचड़ी' आदि कहा है। जनता के कवि कबीरदास ने सरल, सहज बोध गम्य और स्वाभाविक रूप से आये अलंकारों से सजी भाषा का प्रयोग किया है। ज्ञान, भक्ति आत्मा, परमात्मा, माया, प्रेम, वैराग्य आदि गंभीर विषय उनकी रचनाओं में अत्यंत सुबोध एवं स्पष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं।

साखी *शब्द मूल संस्कृत शब्द 'साक्षी' से विकसित है। 'साक्षी' से संबंधित शब्द है 'साक्ष्य', जिसका अर्थ है—प्रत्यक्ष ज्ञान। गुरु सत्य के साक्ष्य प्रमाण के साथ शिष्य को इहलोक और परलोक के तत्वज्ञान की शिक्षा देते हैं। यद्यपि कबीरदास जी विविध शास्त्रों के विधिवत् अध्ययन से दूर थे, परंतु साधु संगति से उन्होंने बहुत कुछ सीखा था। जीवन और जगत की खुली पुस्तक को भी आपने खूब पढ़ा था। उन्होंने अपने ज्ञान और भक्ति के बल पर अपने आराध्य का साक्षात्कार भी कर लिया था। अतः उनके द्वारा विरचित साखियों में हमें विविध विषयों के अनमोल ज्ञान एवं अमूल्य संदेश निहित मिलते हैं। आत्मा के रूप में व्यक्ति के भीतर ही परमात्मा की स्थिति, सद्गुरु की महिमा, गुरु-शिष्य का संबंध, कोरे पुस्तकीय ज्ञान की निरर्थकता, मानसिक शुद्धि की आवश्यकता, जाति के बजाय ज्ञान का महत्व, आत्म-निरीक्षण की जरूरत, गहन साधना एवं कर्म की आवश्यकता, प्रेम-भक्ति की महत्ता और यथासंभव शीघ्र कर्तव्य-पालन की जरूरत—ये दस अनमोल बातें अग्रांकित दस साखियों के जरिए आकर्षक रूप में प्रस्तुत की गई हैं।*

साखी

तेरा साईं तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर-फिर ढूँढ़ै घास ।1 ।

सत गुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार ।2 ।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट ।3 ।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।4 ।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।5।

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।6।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय ।7।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।8।

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, साँस लेत बिनु प्रान ।9 ।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगा, बहुरि करेगो कब ।10।

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) महात्मा कबीरदास का जन्म हुआ था।

(अ) सन् 1398 में (आ) सन् 1380 में
(इ) सन् 1370 में (ई) सन् 1390 में

(ख) संत कबीरदास के गुरु कौन थे?

(अ) गोरखनाथ (आ) रामानंद
(इ) रामानुजाचार्य (ई) ज्ञानदेव

(ग) कस्तूरी मृग वन-वन में क्या खोजता फिरता है?

(अ) कोमल घास (आ) शीतल जल
(इ) कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ (ई) निर्मल हवा

(घ) कबीरदास के अनुसार वह व्यक्ति पंडित है—

(अ) जो शास्त्रों का अध्ययन करता है।
(आ) जो बड़े-बड़े ग्रंथ लिखता है।
(इ) जो किताबें खरीदकर पुस्तकालय में रखता है।
(ई) 'जो प्रेम का ढाई आखर' पढ़ता है।

(ङ) कवि के अनुसार हमें कल का काम कब करना चाहिए?

(अ) आज (आ) कल
(इ) परसों (ई) नरसों

2. **एक शब्द में उत्तर दो :**

(क) श्रीमंत शंकरदेव ने अपने किस ग्रंथ में कबीरदास जी का उल्लेख किया है ?

(ख) महात्मा कबीरदास का देहावसान कब हुआ था ?

(ग) कवि के अनुसार प्रेमविहीन शरीर कैसा होता है ?

(घ) कबीरदास जी ने गुरु को क्या कहा है ?

(ङ) महात्मा कबीरदास की रचनाएँ किस नाम से प्रसिद्ध हुईं ?

3. **पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :**

(क) कबीरदास के पालक पिता-माता कौन थे ?

(ख) 'कबीर' शब्द का अर्थ क्या है ?

(ग) 'साखी' शब्द किस संस्कृत शब्द से विकसित है ?

(घ) साधु की कौन-सी बात नहीं पूछी जानी चाहिए ?

(ङ) डूबने से डरने वाला व्यक्ति कहाँ बैठा रहता है ?

4. **अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :**

(क) कबीरदास जी की कविताओं की लोकप्रियता पर प्रकाश डालो।

(ख) कबीरदास जी के आराध्य कैसे थे ?

(ग) कबीरदास जी की काव्य भाषा किन गुणों से युक्त है ?

(घ) 'तेरा साईं तुझ में, ज्यों पुहुपन में बास' का आशय क्या है ?

(ड.) 'सत गुरु' की महिमा के बारे में कवि ने क्या कहा है ?

(च) 'अंतर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट' का तात्पर्य बताओ।

5. **संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :**

(क) बुराई खोजने के संदर्भ में कवि ने क्या कहा है ?

(ख) कबीर दास जी ने किसलिए मन का मनका फेरने का उपदेश दिया है ?

(ग) गुरु शिष्य को किस प्रकार गढ़ते हैं ?

(घ) कोरे पुस्तकीय ज्ञान की निरर्थकता पर कबीरदास जी ने किस प्रकार प्रकाश डाला है ?

6. **सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :**

(क) संत कबीरदास की जीवन-गाथा पर प्रकाश डालो।

(ख) भक्त कवि कबीरदास जी का साहित्यिक परिचय दो।

7. **सप्रसंग व्याख्या करो :**

(क) ''जाति न पूछो साधु की............पड़ा रहन दो म्यान।

(ख) ''जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ...............रहा किनारे बैठ।''

(ग) ''जा घट प्रेम न संचरै..............साँस लेत बिनु प्रान।''

(घ) ''काल करे सो आज कर............बहुरि करेगो कब।''

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप बताओ :**

मिरग, पुहुप, सिष, आखर, मसान, परलय, उपगार, तीरथ

2. **वाक्यों में प्रयोग करके निम्नांकित जोड़ों के अर्थ का अंतर स्पष्ट करो :**

मनका—मन का, करका—कर का, नलकी—नल की,
पीलिया—पी लिया, तुम्हारे—तुम हारे, नदी—न दी

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारित करो :**

महिमा, चोट, लोचन, तलवार, ज्ञान, घट, साँस, प्रेम

4. **निम्नांकित शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखो :**

(क) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला व्यक्ति

(ख) जो जल में डूबकी लगाता हो

(ग) जो लोहे के औजार बनाता है

(घ) सोने के गहने बनाने वाला कारीगर

(ङ) विविध विषयों के गंभीर ज्ञान रखने वाला व्यक्ति

5. **निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :**

साईं, पानी, पवन, फूल, सूर्य, गगन, धरती

❖ योग्यता-विस्तार

1. महात्मा कबीरदास द्वारा विरचित निम्नलिखित दोहों के आशय जानने का प्रयास करो :

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस दै लै जाय ।1 ।

आये हैं सो जाएँगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर ।2 ।
चारि भुजा के भजन में भूलि परे सब संत।
कबिरा सुमिरै तासु को, जाके भुजा अनंत ।3 ।

2. कबीरदास जी द्वारा विरचित प्रसिद्ध साखियों का संग्रह करके अपने सहपाठियों के बीच अंत्याक्षरी का खेल खेलो।
3. संत कबीरदास विरचित साखियों में निहित संदेशों की प्रासंगिकता पर अपने मित्रों के बीच चर्चा करो।
4. कबीरदास जी की 'सधुक्कड़ी' भाषा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो।
5. जीवन, कर्म और भक्ति-भावना की दृष्टि से संत कबीरदास और श्रीमंत शंकरदेव की तुलना करने का प्रयास करो ।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

साईं = प्रभु, ईश्वर, स्वामी
तुज्झ = तुझ
पुहुपन = पुष्प, फूल
बास = सुगंध, खुशबू
कस्तूरी = एक प्रकार का हिरन जो ठंडे पर्वतीय भागों में रहता है, इसकी नाभि से कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ निकलता है-जो दवा के काम में आता है।
मिरग = मृग, हिरन
सिष = शिष्य, चेला
खोट = कमी, दोष, त्रुटि
चोट = आघात, प्रहार, मार
पोथी = धर्म-ग्रंथ, शास्त्र
कर का = हाथ का
मनका = माला के दाने
मोल करो = मूल्य जान लो
मिलिया = मिला
आपना = अपना
बौरा = पागल
मसान = श्मशान, मरा हुआ
परलय = प्रलय, सृष्टि का नाश
बहुरि = फिर, पुनः
करेगो = करोगे
फिर-फिर = बार-बार, पुनः पुनः
अनँत = जिसका अंत न हो, जो समाप्त न हो
उपगार = उपकार, भलाई
लोचन = आँख, नयन, नेत्र

अनँत = अनादि-अनंत परम, ब्रह्म, आराध्य प्रभु

काढ़ै = निकालते हैं, दूर करते हैं

बाहै = चलाते हैं

मुआ = मर गया

मन का फेर = मन के अपवित्र भाव चिंताएँ, सोच आदि

डारि दे = डाल दे, फेंक दे

म्यान = तलवार, कटार आदि रखने का खाना

कोय = कोई भी, एक भी

पैठ = डूबकी लगाकर

घट = घड़ा, शरीर रूपी घड़ा

बिनु = बिना

साखी = साक्षी, ज्ञान संबंधी दोहे

दोहा = हिंदी का एक प्रसिद्ध छंद, जिसके विषम (पहले और तीसरे) चरणों में तेरह-तेरह और सम (दूसरे और चौथे) चरणों में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार प्रत्येक दल में चौबीस मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु होना अनिवार्य है।

8

मीराँबाई
(1498—1546)

हिंदी की कृष्ण-भक्ति काव्य धारा में कवयित्री मीराँबाई को महाकवि सूरदास जी के बाद ही स्थान प्राप्त है। हालाँकि हिंदी कवयित्रियों में आप अग्रणी स्थान की अधिकारी हैं। भारतीय जन-साधारण के बीच कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास के भजनों की तरह मीराँ-भजन भी समान रूप से प्रिय रहे हैं। कवयित्री मीराँबाई द्वारा विरचित गीत-पद हिंदी के साथ-साथ भारतीय साहित्य की भी अमूल्य निधि हैं। भक्ति-भावना एवं काव्यत्व के सहज संतुलन के कारण आपके गीत-पद अनूठे बन पड़े हैं।

कवयित्री मीराँबाई भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य आराधिका थीं। अपने आराध्य के प्रति एकनिष्ठ प्रेम-भक्ति के कारण आपको **'कृष्ण प्रेम-दीवानी'** की आख्या मिली। अपने आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण एवं उनकी एकनिष्ठ साधना का जो दृष्टांत भक्त-कवयित्री मीराँबाई ने प्रस्तुत किया, वह सबके लिए आदरणीय एवं अनुकरणीय है।

कृष्ण-प्रेम-भक्ति की सजीव प्रतिमा मीराँबाई के जीवन वृत्त को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। कहा जाता है कि आपका जन्म सन् 1498 के आस-पास प्राचीन राजपूताने के अंतर्गत 'मेड़ता' प्रांत के 'कुड़की' नामक स्थान में राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा में हुआ था। बचपन में ही माता के निधन होने और पिता राव रत्न सिंह के भी युद्धों में व्यस्त रहने के कारण बालिका मीराँबाई का लालन-पालन उनके दादा राव दूदाजी की देखरेख में हुआ। परम कृष्ण-भक्त दादाजी के साथ रहते-रहते बालिका मीराँ के कोमल हृदय में कृष्ण-भक्ति का बीज अंकुरित होकर बढ़ने लगा। आगे आपने कृष्ण जी को ही अपना आराध्य प्रभु एवं पति मान लिया।

सन् 1516 में मेवाड़ के महाराजा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज के साथ मीराँबाई का विवाह हुआ, परंतु दुर्भाग्यवश विवाह के सात वर्ष बाद ही भोजराज जी का स्वर्गवास हो गया। राजपूतों की तत्कालीन परंपरा का विरोध करते हुए क्रांतिकारिणी मीराँ सती नहीं हुईं। वे जग सुहाग को मिथ्या और अविनाशी प्रभु कृष्ण जी को सत्य

मानती थीं। प्रभु की आराधना और साधुओं की संगति में उनका समय बीतता चला। राजघराने की ओर से उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी जाने लगीं, परंतु मीराँबाई भक्त प्रह्लाद की तरह टस से मस नहीं हुईं। अब वे अपने प्रभु गिरिधर नागर की खोज में राजप्रासाद से निकल पड़ी। साधु संतों के साथ घूमते-घामते और अपने प्रभु को रिझाने के लिए नाचते-गाते मीराँबाई अंत में द्वारकाधाम पहुँचीं। प्रसिद्ध है कि वहाँ श्री रणछोड़ जी के मंदिर में अपने प्रभु गिरिधर गोपाल का भजन-कीर्तन करते-करते सन् 1546 के आसपास वे भगवान की मूर्ति में सदा के लिए विलीन हो गयीं।

कवयित्री मीराँबाई की रचनाओं में प्रामाणिकता की दृष्टि से कृष्ण-भक्तिपरक लगभग दो सौ फुटकर पद ही विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये फुटकर पद **मीराँबाई की पदावली** नाम से प्रसिद्ध हैं। ये पद कवयित्री मीराँबाई के कृष्ण भक्तिमय हृदय के स्वत: उद्‌गार हैं। वैसे तो उन्होंने मुख्य रूप से हिंदी की उपभाषा राजस्थानी में काव्य रचना की है, परंतु उसमें ब्रज, खड़ी बोली, पंजाबी, गुजराती आदि के भी शब्द मिल जाते हैं। कृष्ण प्रेम-माधुरी, सहज अभिव्यक्ति और सांगीतिक लय के मिलन से कवयित्री मीराँबाई के पद त्रिवेदी संगम के समान पावन एवं महत्वपूर्ण बन पड़े हैं।

'पद-त्रय' *शीर्षक के अंतर्गत संकलित* ***प्रथम पद*** *में आराध्य प्रभु कृष्ण के श्री चरणों में कवयित्री मीराँबाई के पूर्ण समर्पण का भाव व्यंजित हुआ है। वे कहती हैं कि मैं तो गोपाल जी के श्री चरणों की शरण में आ गयी हूँ। पहले यह बात किसी को मालूम नहीं थी, पर अब तो संसार को इस बात का पता चल गया है। अत: प्रभु गिरिधर मुझ पर कृपा करें, मुझे दर्शन दें, शीघ्र ही मेरी सुध लें। मैं तो प्रभु जी के चरण-कमलों में अपने को न्योछावर कर चुकी हूँ।* ***द्वितीय पद*** *में कवयित्री मीराँबाई अपने जीवनाधार सुंदर श्याम जी को अपने घर आने का आमंत्रण देते हुए कहती हैं कि हे स्वामी! तुम्हारे विरह में मैं पके पाण की तरह पीली पड़ गयी हूँ। तुम्हारे आए बिना मैं सुध-बुध खो बैठी हूँ, मेरा ध्यान तो तुम्हीं पर है, मुझे किसी दूसरे की आशा नहीं है, अत: तुम जल्दी आकर मुझसे मिलो और मेरे मान की रक्षा करो।* ***तृतीय पद*** *में कवयित्री मनुष्य मात्र से राम (कृष्ण) नाम का रस पीने का आह्वान करते हुए कहती हैं कि सभी मनुष्य कुसंग छोड़ें और सत्संग में बैठकर कृष्ण का कीर्तन सुनें, वे काम-क्रोधादि छ: रिपुओं को चित्त से निकाल दें और प्रभु कृष्ण प्रेम-रंग-रस से सराबोर हो उठें।*

पद-त्रय

(1)

मैं तो चरण लगी गोपाल।
जब लागी तब कोऊँ न जाने, अब जानी संसार।
किरपा कीजै, दरसन दीजै, सुध लीजै तत्काल।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल बलिहार।।

(2)

म्हारे घर आवौ सुंदर श्याम ।
तुम आया बिन सुध नहीं मेरो, पीरी परी जैसे पाण।
म्हाँरे आसा और ण स्वामी, एक तिहारो ध्याण।
मीराँ के प्रभु वेग मिलो अब, राषो जी मेरो माण ।।

(3)

राम नाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै ।
तज कुसंग सतसंग बैठ णित हरि चरचा सुण लीजै।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, बहा चित्त सूँ दीजै।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै ।।

अभ्यासमाला

❖ **बोध एवं विचार**

1. **'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दो :**

(क) हिंदी की कृष्ण-भक्ति काव्य-धारा में कवयित्री मीराँबाई का स्थान सर्वोपरि है।

(ख) कवयित्री मीराँबाई भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य आराधिका थीं।

(ग) राजपूतों की तत्कालीन परंपरा का विरोध करते हुए क्रांतिकारिणी मीराँ सती नहीं हुईं।

(घ) मीराँबाई अपने को श्री कृष्ण जी के चरण-कमलों में पूरी तरह समर्पित नहीं कर पायी थीं।

(ड.) मीराँबाई ने सुंदर श्याम जी को अपने घर आने का आमंत्रण दिया है।

2. **पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :**

(क) कवयित्री मीराँबाई का जन्म कहाँ हुआ था ?

(ख) भक्त-कवयित्री मीराँबाई को कौन-सी आख्या मिली है ?

(ग) मीराँबाई के कृष्ण भक्तिपरक फुटकर पद किस नाम से प्रसिद्ध हैं ?

(घ) मीराँबाई के पिता कौन थे ?

(ङ) कवयित्री मीराँबाई ने मनुष्यों से किस नाम का रस पीने का आह्वान किया है ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :**

(क) मीराँ-भजनों की लोकप्रियता पर प्रकाश डालो।

(ख) मीराँबाई का बचपन किस प्रकार बीता था ?

(ग) मीराँबाई का देहावसान किस प्रकार हुआ था ?

(घ) कवयित्री मीराँबाई की काव्य भाषा पर प्रकाश डालो।

4. **संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :**

(क) प्रभु कृष्ण के चरण-कमलों पर अपने को न्योछावर करने वाली मीराँबाई ने अपने आराध्य से क्या-क्या निवेदन किया है ?

(ख) सुंदर श्याम को अपने घर आने का आमंत्रण देते हुए कवयित्री ने उनसे क्या-क्या कहा है ?

(ग) मनुष्य मात्र से राम (कृष्ण) नाम का रस पीने का आह्वान करते हुए मीराँबाई ने उन्हें कौन-सा उपदेश दिया है ?

5. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) मीराँबाई के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालो ।

(ख) पठित पदों के आधार पर मीराँबाई की भक्ति भावना का निरूपण करो।

(ग) कवयित्री मीराँबाई का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

6. सप्रसंग व्याख्या करो :

(क) '' मैं तो चरण लगी.............चरण-कमल बलिहार।''

(ख) ''म्हारे घर आवौ....................राषो जी मेरे माण।''

(ग) ''राम नाम रस पीजै.............ताहि के रंग में भीजै।''

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नांकित शब्दों के तत्सम रूप लिखो :

किरपा, दरसन, आसा, चरचा, श्याम, धरम, किशन, हरख

2. वाक्यों में प्रयोग करके निम्नलिखित लगभग समोच्चरित शब्द जोड़ों के अर्थ का अंतर स्पष्ट करो :

संसार—संचार, चरण—शरण, दिन-दीन, कुल—कूल, कली—कलि, प्रसाद—प्रासाद, अभिराम—अविराम, पवन—पावन

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग-परिवर्तन करो :

कवि, अधिकारिणी, बालिका, दादा, पति, भगवान, भक्तिन

4. विलोमार्थक शब्द लिखो :

पूर्ण, सजीव, प्राचीन, कोमल, अपना, विरोध, मिथ्या, कुसंग, सुंदर, अपमान, गुप्त, आनंद

5. निम्नलिखित शब्दों के वचन-परिवर्तन करो :

कविता, निधि, कवि, पौधा, कलम, औरत, सखी, बहू

❖ योग्यता-विस्तार

1. कवयित्री मीराँबाई द्वारा विरचित निम्नलिखित पदों को समझने एवं गाने का प्रयास करो :

(क) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी म्हाँरे सत गुरु, किरपा करि अपनायो।
जनम जनम की पूँजी, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहीं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख हरख जस गायो ।

(ख) माई म्हें गोविंदो लीन्हो मोल।
कोई कहै सस्तो, कोई कहै महंगो, लीनो तराजू तोल।
कोई कहै घर में कोई कहै बन में, राधा के संग किलोल।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल।

(ग) मैं गिरधर के घर जाऊँ।
गिरधर म्हाँरों साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ।
रैण दिना वाके संग खेलूँ ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ।
जो पहिरावै सोई पहिरुं, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण विण पल न रहाऊँ।
जहँ बैठावे तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ।।

2. कवयित्री मीराँबाई के पदों में निहित संदेशों की प्रासंगिकतापर कक्षा में चर्चा करो।
3. अपने पति भोजराज की मृत्यु के पश्चात् राजपूतों की प्रचलित परंपरा का विरोध करते हुए मीराँबाई सती नहीं हुई थीं। सती प्रथा के बारे में जानकारी एकत्र करो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

चरण लगना = शरण में जाना
गोपाल = गौ चराने वाले श्रीकृष्ण
गिरधर = गिरिधर, गोवर्द्धन पर्वत को धारण करने वाले श्रीकृष्ण
सुध = होश, चेतना
आसा = आशा
ण = न, नहीं
वेग = तुरंत, जल्दी, शीघ्र
माण = मान, सम्मान, इज्जत
णित = नित, नित्य, सदा
कूँ = को
ताहि के = उनके
किरणा = कृपा
दरसन = दर्शन
सुध लीजै = खबर लीजिए
नागर = चतुर, भला
म्हाँरे = हमारे
पीरी = पीली
और = दूसरा
तिहारो = तुम्हारा
राषो = रक्षा करो, बचाओ
मनुआँ = मनुष्य
राम = विष्णु भगवान का एक अवतार, कृष्ण
बहा...दीजै = हृदय से दूर कर दीजिए
रंग...भीजै = प्रभु कृष्ण के प्रेम-रंग-रस से सराबोर हो उठिए

9 हरिवंश राय बच्चन
(1907—2003)

कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर 1907 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इलाहाबाद के कायस्थ पाठशाला तथा गवर्नमेंट कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। सन् 1941 से 1952 तक आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के व्याख्याता रहे। फिर दो वर्षों तक इंग्लैंड में शोधकार्य संपन्न कर भारत लौटे। आप कुछ समय तक आकाशवाणी इलाहाबाद, विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ तथा राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

बच्चनजी ने अनेक पुस्तकों की रचनाएँ की हैं। उनमें से **मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, खादी के फूल, मिलन यामिनी** आदि काव्य-ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त डायरी, आलोचना, निबंध आदि भी आप लिखते थे। आपका स्वर्गवास सन् 2003 में हुआ।

*‘**जो बीत गयी**’ कविता हरिवंश राय ‘बच्चन’ द्वारा रचित बड़ी ही रोचक और शिक्षाप्रद है। जिस प्रकार अपने टूटे हुए तारों पर अंबर शोक नहीं मनाता अथवा अपने प्रिय फूलों के सूखने अथवा मुरझा जाने पर मधुवन कभी शोर नहीं मचाता, उसी प्रकार मनुष्य को अपने बीते हुए दुख को भुलाकर वर्तमान की चिंता करनी चाहिए। अपने दुखों को यादकर शोक मनाने से अच्छा है कि जीवन के बाकी बचे समय को सुखपूर्वक बिताया जाए, जीवन का भरपूर आनंद उठाया जाए।*

जो बीत गयी

जो बीत गयी सो बात गयी!
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,

वह डूब गया तो डूब गया;
अंबर के आनन को देखो,

कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गये फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर

कब अंबर शोक मनाता है।
जो बीत गयी सो बात गयी!

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम

वह सूख गया तो सूख गया;
मधुवन की छाती को देखो,

सूखीं कितनी इसकी कलियाँ
मुर्झायीं कितनी वल्लरियाँ,
जो मुर्झायीं फिर कहाँ खिलीं;
पर बोलो सूखे फूलों पर

कब मधुवन शोर मचाता है!
जो बीत गयी सो बात गयी!

जो बीत गयी

जो बीत गयी सो बात गयी!
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,

वह डूब गया तो डूब गया;
अंबर के आनन को देखो,

कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गये फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर

कब अंबर शोक मनाता है।
जो बीत गयी सो बात गयी!

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम

वह सूख गया तो सूख गया;
मधुवन की छाती को देखो,

सूखीं कितनी इसकी कलियाँ
मुर्झायीं कितनी वल्लरियाँ,
जो मुर्झायीं फिर कहाँ खिलीं;
पर बोलो सूखे फूलों पर

कब मधुवन शोर मचाता है!
जो बीत गयी सो बात गयी!

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) कवि हरिवंशराय बच्चन का जन्म हुआ था—

(अ) सन् 1905 में (आ) सन् 1906 में

(इ) सन् 1907 में (ई) सन् 1908 में

(ख) कवि ने इस कविता में बीती बात को भूला कर क्या करने का संदेश दिया है—

(अ) वर्तमान की चिंता (आ) भविष्य की चिंता

(इ) अतीत की चिंता (ई) सुख की चिंता

2. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) अपने प्रिय तारों के टूट जाने पर क्या अंबर कभी शोक मनाता है ?

(ख) हमें मधुवन और मदिरालय से क्या शिक्षा मिलती है ?

(ग) कवि ने 'अंबर के आनन' को देखने की बात क्यों की है ?

(घ) प्यालों के टूट जाने पर मदिरालय क्यों नहीं पश्चात्ताप करता ?

(ङ) मधु के घट और प्यालों से किन लोगों का लगाव होता है ?

(च) 'जो मादकता के मारे हैं, वे मधु लूटा ही करते हैं।' - इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?

(छ) उक्त कविता में मानव जीवन की तुलना किन-किन चीजों से की गई है ? सोदाहरण उत्तर दो।

(ज) इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

3. सप्रसंग व्याख्या करो :

(क) जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो।

(ख) मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधु घट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले फूटा ही करते हैं।

❖ योग्यता-विस्तार

1. 'सुख-दुख जीवन का सत्य है।' - इस विषय पर एक लघु निबंध लिखो।
2. गिरधर कवि की 'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेई' तथा हरिवंश राय बच्चन जी की ही 'निर्माण' कविता पुस्तकालय से लेकर पढ़ो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

सितारा	= तारा
बेहद	= अत्यधिक, बहुत
अंबर	= आकाश, नभ, वस्त्र
आनन	= सिर, चेहरा, मस्तिष्क
कुसुम	= फूल
नित्य	= प्रतिदिन, हर रोज
निछावर	= न्योछावर, उत्सर्ग, समर्पित
मधुवन	= बगीचा, उपवन
वल्लरियाँ	= लताएँ
मधु	= शराब, मद्य, शरद
मदिरालय	= (मदिरा+आलय) शराब की दुकान
मृदु	= कोमल, मीठा
मधुघट	= शराब से भरा हुआ घड़ा
लघु	= छोटा, तुच्छ
ममता	= दया, प्रेम

10 रामधारी सिंह 'दिनकर'

(1908—1974)

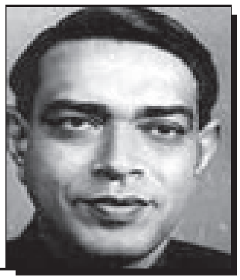

राष्ट्रीयता भावनाओं के मुखर गायक कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में सन् 1908 में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण पाठशाला में हुई। पटना विश्वविद्यालय से सन् 1933 में आपने बी.ए. की डिग्री हासिल की। एक उच्च विद्यालय के प्रधानाचार्य से लेकर उप-रजिस्ट्रार, युद्ध प्रचार विभाग के उप-निदेशक, मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति, भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार आदि पदों पर आपने कार्य किया। बाद में वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किये गये। राष्ट्रीय सेवाओं के लिए आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। 'उर्वशी' महाकाव्य पर आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। 1974 ई. में दिनकरजी का निधन हुआ।

बचपन से ही आप ने कविता लिखी थी। 'दिनकर' एक विचारक तथा गतिशील कवि थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के बाद दिनकर को राष्ट्रकवि के रूप में माना जाता है। **रेणुका, हुँकार, रसवंती, सामधेनी, नील कुसुम, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, चक्रवाल** आदि दिनकर जी की काव्य कृतियाँ हैं। दिनकरजी की भाषा सरल एवं स्पष्ट है। भावों के अनुकूल शब्दों के प्रयोग में आप निपुण हैं।

*'**कलम और तलवार**' नामक प्रस्तुत कविता में राष्ट्रकवि दिनकर ने कलम और तलवार— दोनों की स्वतंत्र सत्ता तथा महत्ता पर प्रकाश डाला है। कलम ज्ञानशक्ति का तथा तलवार दैहिक शक्ति का प्रतीक है। एक ओर, जहाँ कलम के द्वारा मनुष्य ज्ञान का दीप जला सकता है तथा विचारों की शक्ति के द्वारा समाज में नयी चेतना पैदा कर सकता है; वहीं दूसरी ओर युद्ध में विजयी होने के लिए तथा हिंसक पशुओं से आत्मरक्षा हेतु तलवार की आवश्यकता पड़ती है।*

कलम और तलवार

दो में से क्या तुम्हें चाहिये, कलम या कि तलवार?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति अजेय अपार?

अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे, मीठे गान?
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर जा मैदान?
जला ज्ञान का दीप सिर्फ फैलाओगे उजियाली?
अथवा उठा कृपाण करोगे घर की भी रखवाली?

कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगानेवाली,
दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली।
पैदा करती है कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्ज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे?

लहू गर्म रखने को रखो मन में ज्वलित विचार
हिंस्त्र जीव से बचने को चाहिये किन्तु, तलवार।
एक भेद है और, जहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिनगारी।

जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।
जहाँ लोग पालते लहू में हलाहल की धार,
क्या चिन्ता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार?

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कलम किसका प्रतीक है ?

(ख) तलवार किसका प्रतीक है ?

(ग) संसार में कलम और तलवार में से किसकी शक्ति असीम है ?

(घ) मीठे गान की सृष्टि किसके द्वारा होती है ?

(ङ) युद्ध किसके बल पर जीता जा सकता है ?

(च) किसमें विचारों की शक्ति होती है ?

2. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शबदों में) :

(क) कलम हमारे किस काम आती है ?

(ख) तलवार की क्या उपयोगिता है ?

(ग) 'अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान'– का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) कलम विचारों के अंगारे कैसे पैदा करती है ?

(ङ) अक्षर चिनगारी कैसे बनते हैं ?

3. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) हाथों में शस्त्रास्त्र न होने पर भी कलम के द्वारा समाज में फैले भ्रष्टाचार–अनाचार को कैसे दूर किया जा सकता है ?

(ख) कलम और तलवार में से तुम क्या लेना पसंद करोगे और क्यों ?

(ग) इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

4. सम्यक उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) 'कलम और तलवार' कविता का सारांश लिखो।

(ख) कलम और तलवार में किसकी शक्ति अधिक है ? तर्क सहित अपना विचार प्रस्तुत करो।

5. सप्रसंग व्याख्या करो :

(क) अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान ?
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर जा मैदान ?

(ख) लहू गर्म रखने को रखो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु, तलवार।

(ग) जहाँ लोग पालते लहू में हलाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार?

❖ भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो—
   घर, तलवार, दीप, लहू, बिजली, तन, अपार, शक्ति
2. एक ही शब्द के कई-कई अर्थ होते हैं : इन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते हैं। यथा- 'पानी' के चार अर्थ होते हैं- जल, शान, चमक और प्रतिष्ठा।
   निम्नांकित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखो—
   कलम, कक्षा, मैदान, अक्षर

❖ योग्यता-विस्तार

1. 'कलम और तलवार की उपयोगिता' विषय पर एक निबंध लिखने का प्रयास करो।
2. 'कलम देश की बड़ी शक्ति है।' इस विषय पर अपनी कक्षा में एक परिचर्चा आयोजित करो।
3. कवि दिनकर ने प्रस्तुत कविता में कहा है 'हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार।' परंतु आज के संदर्भ में यदि देखा जाए तो उन हिंसक पशुओं को मनुष्य से ही खतरा उत्पन्न हो गया है। क्या तुम बता सकते हो कि आज मानव उन हिंसक पशुओं को किस प्रकार हानि पहुँचा रहा है?

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

तन में = शरीर में
अजेय = जिसे जीता न जा सके
उजियाली = आलोक, प्रकाश
कृपाण = तलवार
लहू = खून
हिंस्र = हिंसक, खूनी
चिनगारी = स्फुलिंग
हलाहल = कालकूट नामक विष, सब कुछ विनष्ट करने की शक्ति।

11

नरेंद्र शर्मा
(1913—1989)

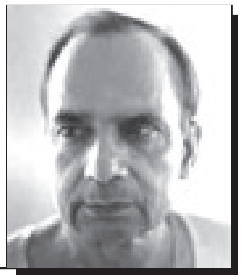

कवि नरेंद्र शर्मा आधुनिक हिंदी काव्यधारा के अंतर्गत छायावाद एवं छायावादोत्तर युगों में होने वाले व्यक्तिवादी गीति-कविता के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। व्यक्तिगत प्रणयानुभूति, विरह-मिलन के चित्र, सुख-दु:ख के भाव, प्रकृति-सौंदर्य, आध्यात्मिकता, रहस्यानुभूति, राष्ट्रीय भावना और सामाजिक विषमता के चित्रण के साथ उनके गीतों एवं कविताओं में विषयगत विविधता सहज ही देखी जा सकती है। मूलत: भावुक और कल्पनाशील कवि होने पर भी नरेंद्र शर्मा की कुछेक कविताओं में सामाजिक यथार्थ के चित्रण के कारण प्रगतिशीलता के भी दर्शन होते हैं।

गीतिकवि नरेंद्र शर्मा जी का जन्म सन् 1913 में उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिलांतर्गत जहाँगीर नामक स्थान में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहीं हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. किया । तत्पश्चात् वे वाराणसी के काशी विद्यापीठ में शिक्षक नियुक्त हो गए। इसी दौरान देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण आपको नजरबंद भी होना पड़ा। फिल्म जगत से आकर्षित होकर आप मुंबई चले गए और वहाँ फिल्मों के लिए गीत लिखते रहे। बाद में आकाशवाणी के निमंत्रण को स्वीकार करते हुए उन्होंने रेडियो की सेवा शुरू की। आप आकाशवाणी में विविध भारती कार्यक्रम के संचालक नियुक्त हुए। इस पद पर रहते हुए आपने हिन्दी को खूब बढ़ावा दिया और सुरीले हिन्दी गीतों के प्रसारण के जरिए 'विविध भारती' कार्यक्रम को अत्यंत लोकप्रिय बनाया। सन् 1989 में इस यशस्वी गीति कवि का देहावसान हो गया।

पंडित नरेंद्र शर्मा की गीति-प्रतिभा के दर्शन छोटी अवस्था में ही होने लगे। उनके दो गीत-संग्रह विद्यार्थी जीवन में ही प्रकाशित हुए। जीवन ने अंतिम दिनों तक आपकी लेखनी चलती रही। आपकी काव्य-कृतियों में **'प्रभात फेरी', 'प्रवासी के गीत', 'पलाशवन', मिट्टी के फूल', 'हंसमाला', 'रक्त चंदन', 'कदली वन', 'द्रौपदी'** (खण्डकाव्य), **'उत्तर जय'** (खण्डकाव्य) और **'सुवर्ण'** खण्डकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। **'कड़वी-मीठी बातें'** उनका कहानी-संग्रह है।

यशस्वी गीतिकवि नरेंद्र शर्मा की काव्य-भाषा सरल, प्रांजल एवं सांगीतिक लय-युक्त खड़ी बोली है। आपने सहज प्रवाहमयी भाषा के जरिए कोमल और कठोर दोनों ही प्रकार के भावों को बखूबी अभिव्यक्ति दी है। माधुर्य एवं प्रसाद गुणों की बहुलता के साथ आपकी रचनाओं में कहीं-कहीं ओज गुण का भी संचार हुआ है। आत्मीयता, चित्रात्मकता और सहज आलंकारिकता आपकी काव्य-भाषा के तीन निराले गुण हैं।

*कवि नरेंद्र शर्मा की दृष्टि मूलतः मानवतावादी रही है। मानवता का जयगान उनकी साहित्य-साधना का लक्ष्य रहा है, इसलिए उनकी रचनाओं से पुरुषार्थ, साहस एवं अडिग-अविचल भाव का संदेश मिलता है। संकलित '**कायर मत बन**' शीर्षक कविता शर्मा की उत्कृष्ट रचनाओं में से अन्यतम है। इस प्रसिद्ध कविता में कवि ने मनुष्य मात्र से यह आग्रह किया है कि वह और कुछ भी बने, पर कायर कभी मत बने। मनुष्य को चाहिए कि उसके मार्ग पर आनेवाली बाधाओं से वह साहस और दृढ़ता के साथ लड़े, कभी भी उनसे समझौता न करे, निराश होकर माथा न पटके, रोए-गिड़गिड़ाए नहीं, कभी दुःख के आँसू न पीए। 'युद्धं देहि' (लड़ाई करो) कहकर अगर कोई दुष्ट और नीच व्यक्ति सामने आ जाए, तो मनुष्य को चाहिए कि या तो प्यार के बल पर उसे जीत ले, नहीं तो उसकी हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा से दे। किसी भी स्थिति में अहिंसा की दुहाई देते हुए पीठ फेर कर वह न भागे। कवि ने माना है कि हिंसा के बदले में की जाने वाली हिंसा मनुष्य की कमजोरी को दर्शाती है, परन्तु कायरता उससे अधिक अपवित्र है। कवि ने कहा है कि मानवता अमूल्य है, उसकी रक्षा के सामने व्यक्ति की सुरक्षा का कोई मूल नहीं है। सत्य तो यह है कि व्यक्ति के आत्म-बलिदान से मानवता अमर बनती है। युगों से संचित मानवता व्यक्ति को खून-पसीने से सींचती है। अतः मनुष्य के लिए उचित यही है कि वह कभी कायर न बने और अपना सब कुछ मानवता पर न्योछावर कर दे।*

कायर मत बन

कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

ले-दे कर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना!
कुछ न करेगा? किया करेगा—
रे मनुष्य—बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर!
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर!
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

तेरी रक्षा का न मोल है,
पर तेरा मानव अमोल है!
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य का सही तोल है!
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट का आत्म-समर्पण!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

अभ्यासमाला

❖ बोध एवं विचार

1. 'सही' या 'गलत' रूप में उत्तर दो :

(क) कवि नरेंद्र शर्मा व्यक्तिवादी गीतिकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

(ख) नरेंद्र शर्मा की कविताओं में भक्ति एवं वैराग्य के स्वर प्रमुख हैं।

(ग) पंडित नरेंद्र शर्मा की गीति-प्रतिभा के दर्शन छोटी अवस्था में ही होने लगे थे।

(घ) 'कायर मत बन' शीर्षक कविता में कवि ने प्रतिहिंसा से दूर रहने का उपदेश दिया है।

(ङ) कवि ने माना है कि प्रतिहिंसा व्यक्ति की कमजोरी को दर्शाती है।

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कवि नरेंद्र शर्मा का जन्म कहाँ हुआ था?

(ख) कवि नरेंद्र शर्मा आकाशवाणी के किस कार्यक्रम के संचालक नियुक्त हुए थे?

(ग) 'द्रौपदी' खंड काव्य के रचयिता कौन हैं?

(घ) कवि ने किसे ठोकर मारने की बात कही है?

(ङ) मानवता ने मनुष्य को किस प्रकार सींचा है?

(च) व्यक्ति को किसके समक्ष आत्म-समर्पण नहीं करना चाहिए?

3. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) कवि नरेंद्र शर्मा के गीतों एवं कविताओं की विषयगत विविधता पर प्रकाश डालिए।

(ख) नरेंद्र शर्मा जी की काव्य-भाषा पर टिप्पणी प्रस्तुत करो।

(ग) कवि ने कैसे जीवन को जीवन नहीं माना है?

(घ) कवि ने कायरता को प्रतिहिंसा से अधिक अपवित्र क्यों कहा है?

(ङ) कवि की दृष्टि में जीवन के सत्य का सही माप क्या है?

4. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) 'कायर मत बन' शीर्षक कविता का संदेश क्या है?

(ख) 'कुछ न करेगा ? किया करेगा—रे मनुष्य—बस कातर क्रंदन'— का आशय स्पष्ट करो।

(ग) 'या तो जीत प्रीति के बल पर, या तेरा पथ चूमे तस्कर'—का तात्पर्य बताओ।

(घ) कवि ने प्रतिहिंसा को व्यक्ति की दुर्बलता क्यों कहा है ?

5. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) सज्जन और दुर्जन के प्रति मनुष्य के व्यवहार कैसे होने चाहिए ? पठित 'कायर मत बन' कविता के आधार पर उत्तर दो।

(ख) 'कायर मत बन' कविता का सारांश लिखो।

(ग) कवि नरेंद्र शर्मा का साहित्यिक परिचय दो।

6. प्रसंग सहित व्याख्या करो :

(क) ''ले-दे कर जीना..... युगों तक खून-पसीना।''

(ख) ''युद्धं देहि' कहे जब....तेरा पथ चूमे तस्कर।''

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. खाली जगहों में 'न', 'नहीं' अथवा 'मत' का प्रयोग करके वाक्यों को फिर से लिखो :

(क) तू कभी भी कायर ....बन।

(ख) तुम कभी भी कायर....बनो।

(ग) आप कभी भी कायर .... बनें।

(घ) हमें कभी भी कायर बनना .... चाहिए।

2. अर्थ लिखकर निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करो :

ले-दे कर जीना, गम के आँसू पीना, खून-पसीना बहाना, पीठ फेरना, टस से मस न होना, कालिख लगना, कमर कसना, आँचल में बाँधना

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखो :

(क) सभा में अनेकों लोग एकत्र हुए हैं।

(ख) मुझे दो सौ रुपए चाहिए।

(ग) बच्चे छत में खेल रहे हैं।

(घ) मैंने यह घड़ी सात सौ रुपए से ली है।

(ङ) मेरे को घर जाना है।

(च) बच्चे को काटकर गाजर खिलाओ।

(छ) उसने पुस्तक पढ़ चुका।

(ज) जब भी आप आओ, मुझसे मिलो।

(झ) हम रात को देर से भोजन खाते हैं।

(ञ) बाघ और बकरी एक ही घाट पानी पीती है।

4. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्ययों को अलग करो :

आधुनिक, विषमता, भलाई, लड़कपन, बुढ़ापा, मालिन, गरीबी

5. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों को परिवर्तित करो :

(क) मैंने एक दुबला-पतला आदमी देखा था।
(मिश्र वाक्य बनाओ)

(ख) जो विद्यार्थी मेहनत करता है वह अवश्य सफल होता है।
(सरल वाक्य बनाओ)

(ग) किसान को अपने परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
(संयुक्त वाक्य बनाओ)

(घ) लड़का बाजार जाएगा। (निषेधवाचक वाक्य बनाओ)

(ङ) लड़की गाना गाएगी। (प्रश्नवाचक वाक्य बनाओ)

❖ योग्यता-विस्तार

1. कवि नरेंद्र शर्मा द्वारा रचित किसी अन्य प्रेरणाप्रद कविता का संग्रह करके कक्षा में सुनाओ।
2. 'कायर इंसान मृत्यु से पहले सौ बार मरता है' — विषय पर मित्र-मंडली में परिचर्चा का आयोजन करो।
3. 'प्रतिहिंसा दुर्बलता है' — विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

कायर	= डरपोक, भीरु
राह	= रास्ता, मार्ग
ले-दे कर जीना	= समझौता करके जीना
खून-पसीना बहाना	= बहुत कष्ट उठाना
युद्धं देहि	= युद्ध दो, युद्ध करो, लड़ाई करो
दुहाई	= शपथ, किसी बात को उचित ठहराने के लिए अन्य कोई बात जोर देकर कहा जाना
प्रीति	= प्यार, मोहब्बत
अपावन	= अपवित्र
मोल	= मूल्य, कीमत
अमोल	= अमूल्य, जिसे मूल्य देकर खरीदा न जा सके
मनुज	= मनु से जो जन्मा हो, मनुष्य
कमर कसना	= किसी काम के लिए पूरी तरह तैयार होना
पाहन	= पत्थर
राह रोकते पाहन	= मार्ग में आनेवाली बाधाएँ
गम के आँसू पीना	= मन के दु:ख को मन में ही दबा कर रह जाना
कातर क्रंदन	= आर्त विलाप, कष्ट से आकुल होकर रोना
पामर	= दुष्ट, नीच, अहेतुक शत्रु
पीठ फेरना	= चुनौती से भागना, लड़ाई के मैदान से भाग खड़ा होना
तस्कर	= बुरा कार्य करने वाला
प्रतिहिंसा	= हिंसा के बदले में की जाने वाली हिंसा
मानव	= मनुष्य, मानवता
तोल	= माप
सर्वस्व	= सब कुछ
टस से मस न होना	= अडिग-अविचलित रहना
कालिख लगना	= कलंक लगना, बदनामी होना
आँचल में बाँधना	= किसी बात को अच्छी तरह से याद रखना

12

नरेश मेहता
(1922—2000)

नरेश मेहता का जन्म सन् 1922 में मालवा के (मध्य प्रदेश) के शाजापुर कस्बे में हुआ था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के पश्चात उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो इलाहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में कार्य प्रारंभ किया, तत्पश्चात विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने अनेक साहित्यिक पत्रों का संपादन भी किया।

नरेश मेहता की ख्याति 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि के रूप में प्रारंभ हुई। आगे चलकर वे विविध विधाओं के यशस्वी रचनाकार के रूप में जाने गए। नरेश मेहता को उनके प्रसिद्ध उपन्यास **वह पथ बंधु था** के कारण विशेष प्रसिद्धि मिली। कवि के रूप में आरंभ में वे साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थे, किन्तु बाद में उससे मोहभंग होने पर उन्होंने वैष्णव भावधारा को अपनाया। सनातन मानव मूल्यों में नरेश मेहता की अटूट आस्था थी। सन् 2000 में उनका निधन हो गया।

बनपाखी सुनो, बोलने तो चीड़ को तथा **मेरा समर्पित एकांत** नरेश मेहता के प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं। **संशय की एक रात** उनका प्रसिद्ध खंडकाव्य है। उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नए कवि के रूप में नरेश मेहता की रचनाओं में दो बातें उभरकर सामने आती हैं— मानव और अस्तित्व की खोज तथा आधुनिक संकट से उत्पन्न आशंका और भय की अभिव्यक्ति। मानव के भविष्य के प्रति उनका विश्वास उनकी हर रचना में विद्यमान है। उनकी रचनाओं में सर्वत्र आधुनिकता का स्वर बोलता है तथा शिल्प और अभिव्यंजना के स्तर पर उनमें ताज़गी और नयापन है।

मृत्तिका *कविता सीधे-सरल बिंबों के सहारे पुरुषार्थी मनुष्य और मिट्टी के संबंधों पर प्रकाश डालती है। मनुष्य के पुरुषार्थ के बदलते रूपों के अनुरूप मिट्टी कभी माँ, कभी प्रिया, कभी प्रजा और कभी चिन्मयी शक्ति के रूप में ढल जाती है। पुरुषार्थ मिट्टी को दैवी शक्ति में बदल देता है।*

मृत्तिका

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ –
जब तुम
मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं –
धन–धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।
जब तुम
मुझे हाथों से स्पर्श करते हो
तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो
तब मैं –
कुंभ और कलश बनकर
जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ।
जब तुम मेले में मेरे खिलौने रूप पर
आकर्षित होकर मचलने लगते हो
तब मैं –
तुम्हारे शिशु–हाथों में पहुँच प्रजारूपा हो जाती हूँ।
पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ–पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं –
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ।
(प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्य हो जाती हूँ)
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है, कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।

मृत्तिका

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ –
जब तुम
मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं –
धन–धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।
जब तुम
मुझे हाथों से स्पर्श करते हो
तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो
तब मैं –
कुंभ और कलश बनकर
जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ।
जब तुम मेले में मेरे खिलौने रूप पर
आकर्षित होकर मचलने लगते हो
तब मैं –
तुम्हारे शिशु–हाथों में पहुँच प्रजारूपा हो जाती हूँ।
पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ–पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं –
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ।
(प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्य हो जाती हूँ)
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है, कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।

❖ भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. बातचीत करते समय हम शब्दों या वाक्यों का एक ही गति से उच्चारण नहीं करते। कभी हम अपनी बीत पर बल देने के लिए और कभी हम अपने आशय को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में रुकते हैं। यह रुकना ही विराम है। विराम का अर्थ है—रुकना। लिखते समय विरामचिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। इनका प्रयोग न होने से कभी-कभी वाक्य का अर्थ एकदम बदल जाता है। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले विराम-चिह्न इस प्रकार हैं :

पूर्णविराम (Full stop)	।
अल्प विराम (Comma)	,
अर्द्ध विराम (Semi-Colon)	;
प्रश्नसूचक (Question mark)	?
विस्मयादि सूचक (Mark of exclamation)	!
कोष्ठक (Brackets)	( )
उद्धरण चिह्न (Quotation mark)	" "
निर्देशन चिह्न (Dash)	—
योजक (Hyphen)	-
विवरण-चिह्न (Sign of following)	:-
उपविराम (Colon)	:
लाघव चिह्न (Abbreviation)	०

इन चिह्नों का प्रयोग देखें—

पूर्ण विराम (।)	:	वाक्य के अन्त में प्राय: पूर्ण विराम लगाया जाता है, जैसे—मैं खाना खा चुका हूँ।
अल्प विराम (,)	:	वाक्य में जहाँ कहीं भी शब्द या वाक्यांश का उच्चारण अलग-अलग करने की आवश्यकता हो, वहाँ अल्प विराम लगाते हैं, जैसे—राम, लक्ष्मण और सीता वन को गए।
अर्द्ध विराम (;)	:	वाक्य में जहाँ पूर्ण विराम से कम किंतु अल्प विराम से अधिक का प्रयोग होता है, जैसे—अवसर का लाभ उठाओ; सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।
प्रश्नसूचक (?)	:	जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो, उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है, जैसे—आप कहाँ से आ रहे हैं?

विस्मयादि सूचक (!)	:	इस चिह्न का प्रयोग विस्मयादिबोधक पदों या वाक्यों में तथा संबोधन के साथ किया जाता है, जैसे—अहा! कितना सुंदर फूल है।
कोष्ठक ( )	:	सामान्य कोष्ठक में वह शब्द या वाक्य रखा जाता है तो मुख्य कथन से सम्बद्ध होते हुए भी उसका अंग नहीं होता। उदाहण के लिए—भवन-निर्माण की सामग्री (ईंट, लोहा, सीमेंट, रोड़ी) बहुत महंगी हो गई है।
उद्धरण चिह्न (‘‘ ’’)	:	किसी व्यक्ति के कथन अथवा विचार या किसी ग्रंथ की पंक्ति को यथावत् उद्धृत करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे—‘‘रघुपति रीति सदा चली आई। प्राण जाएँ पर वचन न जाई’’— यह कथन तुलसी दास जी का है।
योजक (-)	:	यह एक छोटी-सी रेखा है, जिसका उपयोग दो शब्दों के जोड़ने में होता है, जैसे—मनुष्य को हँसते-हँसते जीना चाहिए।
निर्देशक चिह्न (—)	:	यह योजक से बड़ी रेखा होती है। इस चिह्न का प्रयोग आगे आने वाले शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य के लिए होती है, जैसे—आदर्श विद्यार्थी में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—
विवरण-चिह्न (:-)	:	इसका प्रयोग भी निर्देशक चिह्न की तरह आगे आने वाले शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य के लिए होता है, जैसे—घटना का पूर्ण विवरण इस प्रकार है :-
उपविराम (:)	:	इसका प्रयोग भी विवरण चिह्न की तरह होता है, जैसे—संज्ञा के भेदों का विवरण इस प्रकार है :
लाघव चिह्न (०)	:	शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है, जैसे— डॉक्टर = डॉ० प्रोफेसर = प्रो० कृपया पृष्ठ उलटिए = कृ० पृ० उ०

निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम-चिह्न लगाओ—

(क) महाभारत एक महान ग्रंथ है

(ख) युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल और सहदेव पाँच भाई थे

(ग) भारत में कुल कितने प्रदेश हैं

(घ) रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रकवि थे

(ङ) कर्ण ने कहा मित्रता सुखद छाया है

❖ योग्यता-विस्तार

1. मिट्टी और मनुष्य के अटूट संबंध के विषय में एक छोटा-सा लेख लिखो।
2. देवत्व कोई अलौकिक वस्तु नहीं, बल्कि वह मनुष्य का पुरुषार्थ ही है, इस विषय पर अपना विचार प्रकट करो।
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की 'मिट्टी की महिमा' कविता को खोजकर पढ़ो और प्रस्तुत कविता से उसकी तुलना करो।

❖ शब्दार्थ एवं टिप्पणी

मात्र = केवल

कुंभ-कलश = घड़ा, कलसा

मृत्तिका = मिट्टी

विदीर्ण करना = चीरना, फाड़ना

अंतरंग = घनिष्ट, निकटतम

जल लाती = घड़े में जल भरकर लाने वाली प्रिया, जीवन में सरसता का संचार करने वाली

मातृरूपा = माँ-जैसी

प्रजारूपा = संतान-जैसी

स्वत्व = अधिकार

ग्राम्यदेव = लोक देवता, ग्रामवासियों के देवता

चिन्मयी शक्ति = ईश्वर की सत्ता, चेतनमयी शक्ति

आराध्य = आराधना के योग्य

पुरुषार्थ = उद्योग, उद्यम

पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से = उद्योग द्वारा अहंभाव का त्याग करते हुए

टिप्पणी

टिप्पणी

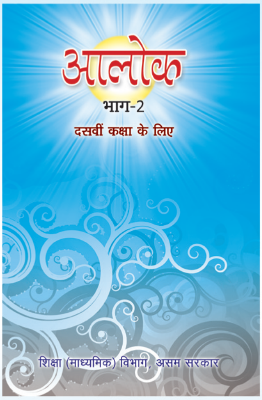

असम सरकार द्वारा नि:शुल्क वितरण हेतु